१५६

# 卐 दो स्मृतियाँ 卐

(दिवंगत दादीसा एवं स्वर्गीय बन्धु)

संकलनकर्त्ता

**गणपत चोपड़ा (जैन)**

प्रकाशक

**गुलाबचन्द चोपड़ा**

(नई लेन) गंगाशहर, राजस्थान

वि०सं० २०३७ सन् १९८०

# अपनी कलम से

जन्म और मृत्यु। दोनों का जोड़ा। कोई आश्चर्यजनक और नई बात नहीं। अनादिकाल से चला आ रहा है जन्म और मृत्यु का यह जोड़ा। जहां जन्म है, वहां मृत्यु है। न जन्म अकेला है, न मृत्यु अकेली। जिसने जन्म लिया है उसे एक दिन निश्चित ही मरना पड़ेगा। मगर जन्म क्या है, मृत्यु क्या है इस बात को समझना अत्यन्त आवश्यक है।

जीव अमर होता है, कभी मरता नहीं है। वह एक देह को छोड़ता है, दूसरी देह ग्रहण करता है। जीव के इसी क्रम का नाम जन्म और मृत्यु है। अब प्रश्न पैदा होता है जन्म और मृत्यु के बीच के समय का। इस समय को व्यतीत करना यानी जीना। जीना भी एक कला है।

मनुष्य-जीवन सौभाग्य से प्राप्त होता है। शास्त्रों, महापुरुषों का कथन है कि मनुष्य जीवन प्राप्त करने के लिए देवता भी तरसते हैं। अज्ञानी मानव भोग-विलास, आर्थिक सम्पन्नता, ऐशो-आराम जैसे क्षणिक और अस्थायी सुखों को ही असली सुख

समझकर इस अमूल्य जीवन को व्यर्थ गंवा देते हैं। ज्ञानी पुरुष ही इस जीवन का मूल्यांकन कर पाते हैं। असली सुखों को पहचानने वाले ही जीने का सही स्वाद, आनन्द ले पाते हैं। जीवन को धर्म, सत्संगत, आध्यात्म में जोड़ना ही असली सुखों को प्राप्त करना है। आध्यात्म में रस लेने वाला व्यक्ति ही मनुष्य जीवन का सही मूल्यांकन कर पाता है। जहां तक मैं समझ पाया हूं मनुष्य बिना रोटी-पानी लम्बे समय तक जी सकता है मगर धर्म के बिना एक क्षण भी नहीं। आवश्यकता है सिर्फ धर्म के सही स्वरूप को पहचानने की।

प्रिय पाठक बन्धुओं! सौभाग्य से ही सही धर्म और सही धर्मगुरु प्राप्त होते हैं। मैं मेरी पूज्य दादीसा को सौभाग्यशाली मानता हूं जिन्हें जैन धर्म मिला, अरहन्त देव मिले, भिक्षु स्वामी द्वारा प्रवर्तित तेरापंथ मिला और युगप्रधानाचार्य श्री तुलसी धर्मगुरु मिले। इन सुरम्य सुयोगों से ही दादीसा ने जीवन का मूल्यांकन किया, जीवन के असली सुखों को पहचाना और जीवन को तप-त्याग में लगाया। आपको अगर तपस्विनी कहें तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी क्योंकि आपने अपने ८१ वर्षीय जीवन में लगभग ५६ वर्ष तपस्यामय जीवन बीताया। अन्त समय में मुनि श्री मूलचन्दजी "मराल" की सत्प्रेरणा से आपने पंडितमरण प्राप्त किया।

प्रिय पाठक बन्धुओं! उक्त पुस्तक चार खण्डों में विभक्त है। स्वर्गीय बन्धु लिखमीचन्द की जीवन कथा भी इस पुस्तक में है।

प्रथम खण्ड — दिवंगत दादीसा

द्वितीय खण्ड - स्वर्गीय वन्धु

तृतीय खण्ड — गणपत गीतावली

चतुर्थ खण्ड - जीवनोपयोगी बातें

पुस्तक लिखते वक्त भाषा की वजाय मूल तत्व की तरफ विशेष ध्यान रखा गया है। लिखने में किसी भी त्रुटि के लिए क्षमा चाहता हूं। मेरा यह अल्प प्रयास सफल होगा अगर पाठकवृन्द इस पुस्तक का सदुपयोग करेंगे।

—गणपत चोपड़ा (जैन)

# अनुक्रमणिका

## प्रथम खण्ड (दिवंगत दादीसा)

**दिवंगत दादीसा**

श्रीमति सुगनीदेवी चोपड़ा

(सं० १९५५ – सं० २०३६)

## समर्पण

अनुपम अलौकिक था तपस्यामय जीवन तुम्हारा।
सदा देगा हमें नव उद्‌बोधन, नवउजियारा।
तुम्हारे जीवन की छोटी-सी तस्वीर "दो स्मृतियां" पुस्तक,
तेरी स्मृति में तुझे ही समर्पण तुम्हारे दत्तक पुत्र द्वारा॥

—दत्तक पुत्र (गुलाबचन्द)

## ❀ परिचय ❀

### जन्म

चरित्रनायक दादोसा का जन्म वि.सं. १९५५ आसोज शुक्ला द्वितीया को भूतपूर्ण परिवार में हुआ। आपके पिताजी का नाम श्री मगनलालजी और माताजी का नाम था जीवां देवी। आपका नाम रक्खा गया—छुगनी।

### जन्म-भूमि

नाल गंगाशहर की है। सन्त मुनिराज विराज रहे थे। शहर से आये हुए एक दर्शनार्थी भाई ने किसी साधुजी से पूछा कि अमुक संत कहाँ विराज रहे हैं? साधुजी ने कहा कि नाल में विराजते हैं। उस भाई ने मकान की सभी मेड़ियाँ खोज डाली मगर संतों के दर्शन नहीं हुए। अथुओ! राजस्थानी में मेड़ियों को पगोथियाँ ही नाल कहते हैं। वह वापिस संतों के पास आया और बोला कि महाराज! अमुक साधुजी के दर्शन नहीं हुए। आपने फरमाया था कि नाल में विराजते हैं मैं तो सारा खोज आया। संतों ने कहा कि थोड़ी देर पहले तुम यहीं थे। इतने समय में नाल आकर बैठे आ गये?

भाई बोला—महाराज ! मैं सारी नालें खोज आया हूं । सन्तों ने कहा—अरे ! नाल एक गांव का नाम है । यहां से करीब १० मील दूर है । बन्धुओं ! वही छोटा-सा गांव नाल जहां हिन्दुस्तान की पश्चिमी सीमा का सीमान्त सैनिक हवाई अड्डा है आपकी जन्म-भूमि है । गांव छोटा है मगर वहां पर तेरापंथ में श्रद्धा रखने वाले अच्छे, जागरूक श्रावक हैं ।

## पैतृक-परिचय

आपके पिताजी श्री मगनजी नाम से जाने जाते थे । आप एक आंख से लाचार थे । आठगांव (असम) में आपका पाट का व्यवसाय था । आपके पिताजी श्री के आप चार सन्तानें थीं । दो पुत्र—श्री गिरधीचन्दजी, श्री देवचन्दजी । दो पुत्रियां-सुगनी (आप), पन्नी । स्वर्गीय गिरधीचन्दजी के छः पुत्रों का भरा पूरा परिवार है । श्री देवचन्दजी के तीन पुत्रियों एवं तीन पुत्रों में से एक पुत्री दीक्षित है जिस का नाम साध्वीजी श्री धर्मवतीजी है । आप काफी समय से तपस्विनी साध्वीजी श्री पन्नाजी (सिरासर) के साथ में है ।

## वैवाहिक सम्बन्ध

जैसा कि आप ऊपर पढ़ चुके हैं कि आपके पिताजी श्री मगनजी आठगांव (असम) में पाट के व्यवसायी थे । आपकी दुकान के सामने वाली दूकान में जो कालूरामजी चोपड़ा गंगा-शहर (सिरसर बास) का पाट व कपड़े का व्यवसाय था ।

किस्तुरचन्दजी कालूरामजी के छोटे भाई थे। मगनजी और किस्तूरचन्दजी पाट खरीदने के लिए गांवों में जाते तो प्रायः दोनों एक साथ जाते। किस्तुरचन्दजी मजाक में मगनजी को काणा कहते।

एक दिन की बात। मगनजी कालूरामजी के यहां आये और घर के टीनों को बार-बार देखने लगे। कालूरामजी बोले- मगनजी ! कांई देखो। आज कांई चित्त चढग्यो।

मगनजी—देखां हां, टीन सोने रा होग्या कांई ?

कालूरामजी—किंया ?

मगनजी—किंया कांई ? म्हारै तो एक आंख है। किस्तूरजी रै दो आंख्या हैं। बांनै घणो दिखै है। पाट भाप में वेसी खाता ही हूसी। टीन शायद सोने रा होग्या होसी।

कालूरामजी—(हंसते हुए) थांरो लारो तो हूं छोड़ा दूं।

मगनजी—किंया ?

कालूरामजी—थांरी छोरी किस्तूरे नै परणा दो, काणो कहणो अपने आप छोड़ देसी।

मगनजी—(हंसते हुए) झट बोल्या कि नटै जके री नाक कटै।

प्रिय बन्धुओं ! बस, इसी हंसी मजाक से यह सगपण तय हो गया।

## शादी

सिर्फ १२ साल की उम्र पूज्य दादीसा की। वि.सं. १९६७ फाल्गुन बदी ३ को आपका शुभ विवाह श्री किस्तूरचन्दजी के साथ में हुआ। कहते हैं कि पुराने जमाने में कोई किसी की लड़की बर्मादा नहीं लाते थे। इसी प्रथा के अनुसार चार सो रुपये आपके पीहर वालों को दिया आपके ससुराल वालों ने। इस प्रथा का नाम था रीत। छोटी उम्र में विवाह एवं रीत के रुपयों का लेण-देण एक प्रकार की कुप्रथा ही मानी जायेगी। मगर एक बात माननी पड़ेगी कि दहेज, ठहराव आदि की प्रथा पुराने जमाने में नहीं था। आज सारी तरह से सम्पन्न व्यक्ति भी (Indirect) आइडिया पूछने में नहीं सकुचाते कि माल कितना देगे ?

## ससुराल परिचय

बीकानेर से २२ कि.मी. दूर। छोटा सा गांव गेरसर। चोपड़ा परिवार। आपके ससुरजी का नाम श्री चेतनरामजी था। वंश-परिचय देने से पहले मैं आपको चोपड़ा जाति के बारे में थोड़ा-सा बतला देना चाहता हूं कि चोपड़ा जाति कैसे उत्पन्न हुई।

ऐसा कहा जाता है कि चतरोजी नाम के एक व्यक्ति थे। पता नहीं, उनके हाथों में क्या करामात थी कि उनके हाथ से तेल चुपड़ाने पर शरीर का भयंकर रोग भी ठीक हो जाता था।

एक बार राजा को कुष्ट रोग जैसा भयंकर रोग हो गया था जो चतरोजी से तेल चुपड़ाने पर ठीक हो गया। चतरोजी के तेल चुपड़ने की बात इतनी प्रसिद्ध हो गयी कि उनका मूल नाम चतरोजी लुप्त सा हो गया और लोग उन्हें चोपड़ोजी, चोपड़ोजी कहने लगे। उन्हीं का वंशज है चोपड़ा जाति। बहुत लम्बी पीढ़ी तक का उल्लेख न करके चोपड़ा परिवार का संक्षिप्त परिचय मैं आपको बता देना चाहता हूँ।

चेतनरामजी के ५ पुत्र और ३ पुत्रियां हुईं। पुत्र—कालूरामजी, किस्तूरचन्दजी, मूलचन्दजी, कुम्भकरणजी, टीकमचन्द जी और पुत्रियां—लाधु, सोनां और भूरी। चेतनरामजी के देहावसान के बाद चोपड़ा परिवार गंगाशहर नई लेन में बस गया। उस वक्त गंगाशहर छोटा गांव था। गंगाशहर का गेरसर आज अपनी मिलन सारिता के कारण प्रख्यात है।

हां! तो चेतनरामजी के प्रथम पुत्र श्री कालूरामजी तेरापंथ के प्रतिष्ठित श्रावकों में से एक थे। अन्धरूढ़ियों में आपका विश्वास नहीं था। गंगाशहर तेरापंथ युवक परिषद द्वारा प्रकाशित "कालू स्मारिका" में आपका एक किस्सा बड़ा ही रोचक है जो यह सिद्ध करता है कि आप अन्धरूढ़ियों में बिलकुल विश्वास नहीं रखते थे। कालूरामजी के तीन पुत्र व एक पुत्री में से वर्तमान में सबसे बड़े पुत्र श्री गुलाबचन्दजी एवं पुत्री श्री तुलसी देवी सिपाणी है।

चेतनरामजी के द्वितीय पुत्र श्री किस्तूरीचन्द जी यानी आपके जीवन साथी। पति का जीवन सुखी होता है अगर उसे अच्छा घर मिले और अच्छा वर मिले। पूज्य दादीसा के दोनों ही बातों का सुयोग मिला। श्री किस्तूरचन्दजी स्वास्थ्य की दृष्टि से सुडौल व शक्तिशाली थे एवं धर्म की दृष्टि से धर्मपरायण, अच्छे श्रावक थे। आपकी शक्ति और धर्मपरायणता नीचे लिखे प्रसंग से स्पष्ट होती है।

## बकरा मारो : मौत टारो

प्रिय पाठक बन्धुओं! शायद आप जानते ही होंगे कि असम में १०/१२ हाथ जमीन खोदने पर पानी निकल जाता है। घटना उस वक्त की है जब किस्तूरचन्द जी आठगांव (असम) में रहते थे। वहां एक कुए में बैल गिर गया। बैल कुएं में फंस गया। वहीं पर एक जाट रहता था जिसका नाम था। पूरो जाट। पूरे जाट ने और आपने बैल को रस्से से बांधकर कुएं से निकाल लिया। इस घटना से स्वतः सिद्ध हो जाता है कि आप शक्तिशाली पुरुष थे।

अब आगे पढ़िये आपकी धर्मपरायणता। बैल को कुए से निकालने के कारण आपकी छाती में कुछ दर्द रहने लगा। दर्द बढ़ता ही गया। जन्त्र-मन्त्र वालों से सम्पर्क किया गया। जन्त्र-मन्त्र वालों ने कहा कि आपके इस साहसिक काम के कारण आप को नजर लग गई है। आपके बचने का एक ही उपाय है

कि देवी को भक्त चढाना होगा । एक बकरे को मारकर बलि चढाने से आप बच जायेंगे । हम बकरा ले आते हैं और आपके सामने ही काट कर देवी को चढा देते हैं । किस्तूरचन्दजी ने कहा कि मुझे मृत्यु का भय नहीं है । मैं मरू या जीऊं मगर इस प्रकार किसी जीव का घात नहीं कर सकता । मेरा जीवन बचाने के लिए बकरा नहीं मारना है ।

बन्धुओं ! इसे कहते हैं धर्मपरायणता । स्वार्थ के कारण व्यक्ति न जाने क्या-क्या अनैतिक कार्य, अत्याचार कर लेता है । धर्म का मर्म समझने वाला, धर्मपरायण पुरुष ही संकट की घड़ी में अपना धर्म निभा सकता है । आप इस प्रसंग से भी किस्तूर चन्दजी की शक्ति और धर्मपरायणता को अच्छी तरह समझ गये होंगे ।

## दाम्पत्य जीवन

यह तो आप पहले ही पढ चुके हैं कि आपका विवाह १२ साल की छोटी उम्र में ही हो गया था । आपके दो पुत्र व एक पुत्री हुई । जिनका नाम क्रमशः गणेश, पन्ना व भीखी था । आप पन्निये की मां से जानी जाती थी । आपको सन्तान-सुख अस्थायी ही मिला । काल ने किसी को आठ महीने से, किसी को छः महीने से डस लिया । काल इतने पर भी सन्तुष्ट नहीं हुआ । आपको शादी किए सिर्फ १२ वर्ष हुए थे । वि. सं. १९८० आसोज वदी १ को काल ने आपका सुहाग छीन लिया ।

आपके पतिदेव श्री किस्तूरचन्दजी इस संसार से चल बसे। भर यौवन में भयंकर वज्रपात। सुहाग भी छिन गया और गोद भी खाली। मगर होनहार को कोई टाल नहीं सकता। संकट की ऐसी घड़ी में धर्म ही एकमात्र सहारा होता है। आपने वही किया जो एक धार्मिक को करना चाहिये।

## दत्तक पुत्र (श्री गुलाबचन्दजी)

श्री कालूरामजी के ज्येष्ठ पुत्र श्री गुलाबचन्दजी। उस वक्त उम्र करीब २० साल की। पूज्य दादीसा के पतिवियोग हो जाने एवं कोई सन्तान जीवित नहीं रहने के कारण वि. सं. १९८० में श्री गुलाबचन्दजी को गोद ले लिया। गुलाबचन्दजी अपनी काकीजी के घर आ गये और उन्हें अपनी माता तुल्य मानकर रहने लगे। उस समय आपकी शादी हो चुकी थी। मेरे पूज्य पिताजी श्री गुलाबचन्दजी की शालीनता, मिलनसारिता धर्मनिष्ठता के बारे में मैं ज्यादा लिखना उचित नहीं समझता क्योंकि पाठकगण वर्तमान में उन्हें देखते ही हैं।

# २. तपस्वी जीवन

## त्याग में धर्म, भोग में अधर्म

जीवन एक स्रोत होता है। इसे जिधर मोड़ दिया जाता है उधर ही मुड़ जाता है। दादोसा ने अपने जीवन स्रोत को सही मोड़ दिया। अष्टमाचार्य श्री कालूगणि जैसे धर्मगुरु एवं मुनिश्री पृथ्वीराजजी जैसे महान संतों का गंगाशहर में दीर्घ-कालीन प्रवास का आपको शुभ सुयोग मिल गया। वि.सं. १९८० से ही आपकी त्याग-तपस्या, स्वाध्याय के प्रति रुचि जागृत होने लगी। भिक्षु स्वामी के प्रसिद्ध सूत्र 'त्याग में धर्म, भोग में अधर्म' को आपने आत्मा में रमा लिया। आपने त्याग-तपस्या को ही जीवन का आधार माना। आपकी त्याग तपस्या के प्रति रुचि, गण-गणि के प्रति अटूट श्रद्धा कितनी, कैसी थी, इस पुस्तक में आपको पढने को मिलेगी।

## नित्य नियम

धर्म के प्रति सदा से ही आपकी रुचि अच्छी रही है। प्रमाद को आपने कभी प्रश्रय नहीं दिया है। किस समय [illegible]

का आयुष्य बंधता है, किस वक्त श्वांस चलता-चलता ही रुक जाता है कोई पता नहीं । इसीलिए महानपुरुष शिक्षा देते हैं कि पाप से डरना चाहिये, किसी भी क्षण का दुरुपयोग नहीं करना चाहिये । पूज्य दादीसा ने महापुरुषों की इस शिक्षा को अच्छी तरह समझा । आप सारा दिन कुछ न कुछ त्याग करती ही रहती । आपके नित्य नियम इस प्रकार थे :—

- प्रतिदिन गांव में बिराजित चारित्रात्माओं के दर्शन किये बिना कुछ नहीं खाना-पीना ।
- नित्य ५ सामायिक करना ।
- प्रतिदिन २ पहर खाद्य संयम रखना ।
- प्रतिदिन व्याख्यान सुनना । सूत्र सुनने के लिए जाते वक्त पैरों में जूती नहीं पहनना ।
- प्रतिदिन २५ द्रव्यों से अधिक नहीं खाना ।
- साधु-साध्वियां के गोचरी के लिए नहीं चले जाने तक खाना नहीं खाना । वर्षात के दिनों में, सर्दी में ओस के समय कभी-कभी ऐसी स्थिति होती है कि ४-५ घन्टे तक गोचरी जाने में बाधा पड़ जाती है ।
- प्रतिदिन नोकारसी करना । द्वितीया, पंचमी एवं एकादशी को पहरसी करना ।
- अष्टमी, चतुर्दशी एवं कालूगणि की छठ (स्वर्गवास दिवस) को उपवास करना ।

## तपस्या का लेखा जोखा

आपने अपने जीवन में जो तपस्या की, शायद गेरसर ग्राम के चोरड़ा परिवार में पांच पीढी में भी किसी ने नहीं की, तपस्या का संकलन करने में भूल हो सकती है मगर सं. २०१५ तक की तपस्या दादीसा ने बताया वैसे लिखी है। उसके बाद प्रतिवर्ष तपस्या हम लिख लेते। आपकी वि.सं. २०३४ तक की तपस्या का लेखा जोखा वि.सं. २०३५ में गंगाशहर चातुर्मास में आचार्य प्रवर देखकर आश्चर्य करने लगे। आप सदा से ही तपस्या करने में तत्पर रहती। गांव में जब भी तपस्या होती आप तैयार रहती। ग्यारह रंगी की तपस्या में ग्यारह, नवरंगी में नौ, सतरंगी में सात यानि ऊपर की तपस्या में आपका नम्बर रहता।

आपकी तपस्या का आंकड़ा अगले पृष्ठ में है।

# दादीसा की तपस्या

**जन्म**
वि०सं० १९५५
आसोज सुदी २

**विवाह**
वि०सं० १९६७
फालगुन बदी २

| तप | संख्या |
|---|---|
| १ | ४१०६ |
| २ | १८२ |
| ३ | १८५ |
| ४ | ६८ |
| ५ | १५१ |
| ६ | ११ |
| ७ | २३ |
| ८ | ५ |

**विशेष तपस्यायें**

**एकान्तर—**
वि॰सं० १९८० से सावण-सावण एकान्तर तप ।
(कुल ५७ सावण) एवं चार भाद्र मास बेले बेले तप ।

**कण्ठहार —**
(तेला १, बेला २, उपवास ७)

**कर्मचूर—**
(उपवास १२५, बेला ४२, तेला २३, चोला १७,
पंचोला १३, अठाई २)

**धर्मचक्कर—**
(उपवास, बेलो, तेलो, चोलो, पंचोलो करके फिर चोलो,
तेलो, बेलो, उपवास)

पतिवियोग
वि०सं० १९८०
आसोज वदी १

स्वर्गप्रयाण
वि०सं० २०३६
चैत वदी ४

| ९ | ९ |
|---|---|
| १० | ८ |
| ११ | ७ |
| १२ | ३ |
| १३ | १ |
| १४ | १ |
| १५ | १ |
| १६ | १ |
| १७ | १ |
| १८ | १ |
| ३१ | १ |

**तीर्थंकरों की लड़ी—**
(प्रथम तीर्थंकर का एक उपवास, द्वितीय के दो उपवास। इसी प्रकार चौबीस तीर्थंकर के चौबीस उपवास यानि कुल ३०० उपवास)

**परदेशी राजा का बेला—**
(४२ बेला)

**वर्षीतप—**
एक बार (वर्ष भर एकान्तर करना)

**अन्य त्याग-प्रत्याख्यान**

चौविहार—वि०सं० १९८० से
लिलोती त्याग —वि०स० १९८५ से
चार खंधक का त्याग—वि सं० १९९० से
अणुव्रत—वि०सं० २००९ से
श्रावक के बारह व्रत—वि०सं० २००९ से
द्रव्य—६० वर्ष की उम्र के बाद ५१ द्रव्य उपरान्त त्याग।

## अनगिनित तप

तपस्या के आंकड़ों के अतिरिक्त आपने आयंबिल, एकासन अलूण, दश पच्चक्खान, सामायिक, संवर, पौषध, पोरसी, आधा दिन, लेह, मौन, ध्यान आदि कितने किये उसकी गिनति नहीं है।

## स्वाध्याय स्नेह

धार्मिक व्यक्ति के लिए स्वाध्याय उतना ही आवश्यक है जितना जीवन में रोटी और कपड़ा। स्वाध्याय से ज्ञान वृद्धि होती है, तत्व की पहिचान होती है, मनुष्य को अपने लक्ष्य प्राप्त करने में सफलता मिलती है। स्वाध्याय के बिना पुस्तकों का ज्ञान पुस्तकों में ही रह जाता है। स्वाध्याय के प्रति आपकी रूचि अच्छी थी। आप पढ़ी-लिखी नहीं थी, फिर भी किताब पढ़ने वालों से पूछ पूछ कर, साधु-साध्वियों से पूछ-पूछ कर कण्ठस्थ कर लेती। अनपढी होने के कारण उच्चारण अशुद्ध था मगर भावना शुद्ध थी। आपको पंचपद वन्दना पच्चीस बोल. तत्व, चर्चा के थोकड़ों के अतिरिक्त नीचे लिखी गीतिकाएं कण्ठस्थ थी :—

१. महावीर प्रार्थना
२. वीर प्रार्थना
३. अणुव्रत प्रार्थना
४. सोलह सतियां की ढाल
५. मुनिगुण वर्णन(मुणिन्द मोरा)
६. दशदान की ढाल

गण गणि और आप

गण गणि के प्रति आपकी श्रद्धा गहरी थी। गण-गणि की उतरती बात आपको बिल्कुल नहीं सुहाती। वृद्धावस्था में उठने बैठने में तकलीफ होती तो "हे भिक्खु स्वाम" का शब्द ही उनके मुंह से निकलता। ओ हो या ओ मां वगैरह का उच्चारण उनके मुंह से सुनने में नहीं आया। कभी कभी हम साधु साध्वियों, जैन सिद्धान्तों, संघ की विधि विधान को लेकर के आप से तर्क करते तो आप यही कहती कि गुरु जो करते हैं वह बिलकुल ठीक होता है। गुरु की, गण की, साधु-साध्वियों की कभी नींदा नहीं करनी चाहिये। "इसा गुरु पड्या कठै, भागां सूं मिलै है"– ये शब्द होते दादीसा के हमारी तर्क के प्रत्युत्तर में। दर्शन, सेवा, गोचरी आदि के प्रति वे स्वयं तो ध्यान रखती ही थी लेकिन दूसरों को भी प्रेरणा देती। इन कामों में कोई आलस या गड़बड़ी करता तो उन्हें अनगमता लगता। आचार्यप्रवर का सं० २०३५ का चातुर्मास गंगाशहर था, उस समय की बात आपको बतलाऊं।

एक बार मांनू (पड़पोता) की मां के व्याख्यान में जाने की देरी हो गई तो आपने मुझसे कहा "न तो मांनू रे टाबर, न मांनू री मां रे नान्हो टाबर तो ही, मांनू री मां तो व्याख्यान में जाने में देरी कर दे।"

गुरुदेव के दर्शन के लिए सदा से ही उनके मन में तड़फ रहती। संसारपक्षीय अपनी भतीजी साध्वी श्री कर्णवती

दर्शन सेवा भी आप प्रतिवर्ष करती, कभी-कभी हम लोगों के जाने में कोई असुविधा होती तो आप लिच्छु भुवा को तैयार कर लेती और चली जाती। यह लिच्छु भुवा बीकानेर की नाईन है। करीब ४० वर्ष से मेरे चाचाजी श्री चुनीलाल जी के घर नौकरी रुप में रहती है लेकिन बहुत से लोग नहीं जानते हैं कि यह नौकरी में है या इनके घर की है। जैन धर्म में पूरी श्रद्धालु है, तेरापंथ की समकित ली हुई है। अणुव्रती है। उपवास, सामायिक, सूत्रश्रवण नियमित रुप से करने के साथ साथ तपस्या भी करती है। अभी सं. २०३६ में १६ का थोकड़ा किया। प्रतिवर्ष गुरुदर्शन करती है।

पूज्य दादीसा की गणगणि के प्रति अगाध, अटूट श्रद्धा सराहनीय, स्मरणीय, ग्राह्य है।

## संथारे में स्वर्गप्रयाण

संथारा यानी पंडितमरण वही व्यक्ति प्राप्त कर सकता है जिसके कर्म हल्के होते हैं, आत्मा साहसिक होती है। मौत को ललकारना मामूली बात नहीं है। बिना हिम्मत के मौत को ललकारी नहीं जा सकती। गुरुदेव वि. सं २०३५ के गंगाशहर चातुर्मास में आपको दर्शन देने घर पर पधारे तो आपने गुरुदेव के पदार्पण के उपलक्ष में ११ की तपस्या करने का संकल्प लिया। तपस्या शुरु की। शारीरिक स्थिति कमजोर होने से साध्वी प्रमुखाजी ने संथारे के लिए प्रेरणा दी मगर मैं आपको

पता चुका [illegible] नहीं सकता [illegible] शरीर के [illegible] गये।

[illegible] में आपने [illegible] का [illegible] किया। वि. सं. २०३३ चैत वदी ४ को प्रातः मुनिश्री [illegible] ने आपको दर्शन दिये। मुनिश्री ने मंगली व उपदेश भी [illegible] आपको संथारे की प्रेरणा दी। बोलने की शक्ति क्षीण हो चुकी थी, मगर संथारा पचक्खाने के लिए आपने इंगित किया। मुनिश्री ने संथारा पचक्खाया। देखते-देखते ही करीब १५ मिनट बाद आपका शरीर शांत हो गया। अन्तिम संस्कार में सैकड़ों व्यक्तियों ने भाग लिया।

## जैन संस्कार विधि

आपके परिवार वालों ने आपके इस साहस को महत्व दिया। आपके पीछे किसी प्रकार का आडम्बर नहीं किया। सारा कार्य जैन संस्कार विधि से सम्पन्न किया।

## श्रद्धाञ्जलि

हे दिवंगत पुण्य आत्मा, तपस्विनी आत्मा! आपका साहसिक स्वर्गप्रयाण सदा अविस्मरणीय रहेगा। आपके तपस्यामय जीवन की स्मृति सदा स्मृतिपटल पर रहेगी। मैं अपनी ओर से, सारे परिवार की ओर से आपको शत-शत श्रद्धाञ्जलि करता हूं।

# ३. झलकियां

## १. काम

आपको काम करना सदा से ही प्रिय था। ६० वर्ष की उम्र में भी काम करने की वही तत्परता जो पहले थी जब कि आपके सामने एक बहु, चार पोतों की बहुएँ काम करने वाली हो गई। रसोई का काम झाड़ू निकालना गायों का काम आदि कैसा ही काम हो फरन जुट जाती। गाय, बछड़े, लकड़ी आदि रखने का स्थान घर से अलग था। वहां से थेपड़ी, लकड़ी वगैरह स्वयं लाती। हम कहते कि अब आप वृद्ध हो गये, बहुएं अपने आप ले आयेगी। इसके जवाब में आप कहती कि बाहर बहुओं के श्वसुरजी, काकी श्वसुरजी, जेठ आदि बैठे रहते है इसलिए ठीक नहीं लगता। मैं स्वयं ही ले आऊंगी। ऐसी थी उनकी काम के प्रति तत्परता व गहरा चिन्तन।

## २. फटे जूते

बात उस समय की है जब हमारे घर में कुछ नये कमरे [illegible] जी सुथार (चतरांजी) की देखरेख में बन रहे थे।

मेरा सबसे छोटा भाई प्रेमचन्द बीकानेर से सैंडिल लाया। पूनमजी चलवां ने मजाक में दादीसा को कहा कि देखिये ! प्रेमा कितना भोला है ? अठाईस रुपयों में चारों तरफ से ये फटे जूते लाया है। पुराने जमाने की दादीसा आजकल की फैशन को क्या जाने ? उन्हें मालूम नहीं कि सैंडिल चारों तरफ से खुली डिजाइन की होती है। चलवांजी की बात उनके जच गई। प्रेमा बाहर से आया तो दादीसा ने कहना शुरू किया कि मैंने तुम्हें कई बार कहा था कि कोई चीज लाओ तो बड़े भाई को साथ ले जाया करो। तुम टाबर हो। इतने रूपये देकर ऐसे फटे जूते लाये हो। दूकानदार ने तुमको ठग लिया है। मैं भी पास में खड़ा-खड़ा सुन रहा था मगर हंसी के अलावा मेरे पास कोई जबाब नहीं। मैं समझ गया था कि बात जरूर चलवांजी ने कही है क्योंकि वे कुछ दूरी पर खड़े-खड़े हंस रहे थे। हां ! तो हम इसे दादीसा का भोलापन भले ही कह सकते हैं। मगर दिल उनका निर्मल था।

## ३. धर्मपरायणता

आपकी आंखों का ऑपरेशन चार बार हुआ। चारों ही ऑपरेशनों में चतुर्दशी आई। जैसा कि आप पहले पढ़ चुके हैं कि चतुर्दशी का उपवास करने का आपको यावज्जीवन नियम था। डॉक्टरों ने उपवास करने के लिए मना किया क्योंकि आंख

का काम था। मगर आप दृढ़ रहीं। आपने कहा कि चाहे शांति रहे या न रहे, प्राण रहे या चले जाय मगर उपवास नहीं छोड़ सकती। घर वालों को भी आपका यही कहना था कि कभी किसी वक्त अगर बेहोश हो जाऊं या ज्यादा अस्वस्थ हो जाऊं तो भी चतुर्दशी का उपवास भंग मत कराना। वास्तव में ही आपकी श्रद्धा, भावना, दृढ़ता, धर्मपरायणता सराहनीय, अनुकरणीय है।

## ४. सुगना सौरभ (गीतिकाएं)

### दादीसा रो ब्यावलो

त्रिशला रा जाया प्रभो, जैन जगत सरताज रे,
पहलां मनाऊं महावीर नै ॥ १ ॥
दीपां रो दुलारो, तेरापंथ रो सांवरियो रे,
दूजै मनाऊं भिक्षु गौरवै ॥ २ ॥
वदना री कंवर कन्हैयो तुलसीराम रे,
लूळ-लूळ नमूं मैं दीनानाथ नै ॥ ३ ॥
भीखणजी रो पंथ पायो, तुलसी-सो रखवारो रे,
बाग खिल्यो है भिक्षु स्वाम रो ॥ ४ ॥
पुन्यवानी बड़ा भागी, जीव प्यारा दादीसा,
सुणो सुणाऊं ब्याव आपरो ॥ ५ ॥
नाल रा मगन-जीयां गुलगुलिया पर जनम्या हो.
सुगना धरायो नाम आपरो ॥ ६ ॥
पाट रा व्यापारी थांरा पिता आठगांव में,
लेकिन लाचार एक आंख सूं ॥

सामली गोदाम वरणी बैठ्या कालूरामजी,
आया मगन निरखै टीन नै ॥ ८ ॥
कहो ओ मगनजी के बात चित्त चढी है,
कांकर निरखो हो आज टीन जी ॥ ९ ॥
कारणी कह चिड़ावै थांरो किस्तूरो वीर रे,
लांतो होवेला बेसी माप जी ॥ १० ॥
म्हारै तो है आंख एक (परण) बांरै दोनू आंखजी,
शायद सोने रा होग्या टीन जी ॥ ११ ॥
लारो तो छोड़ा दूं थांरो बोल्या कालुरामजी,
छोरी परणादो थे किस्तूर नै ॥ १२ ॥
रीत रा रुपइया लागा चार सौ विवाह रा,
देखो जमानो स्याणा आगलो ॥ १३ ॥
भूल चूक करज्यो माफ यदि हुई ढाल में,
"गणपत" सुणायो दादी-व्यावलो ॥ १४ ॥

(लय — तेजो)

भिक्षु स्वामी री जयवन्तो शासन,
पायो छोगांसुत कालूगणिराया दादीसा, तपस्यामय... । ७ ।
लगन लगी तपत्याग में थांरी,
अस्सिये सूं चौविहार कराया दादीसा, तपस्यामय...। ८ ।
छोड़ी लिलोती पिचियासियै सूं
चारों खंधक निब्बिये छोड़ाया दादीसा, तपस्यामय...। ९ ।
कण्ठहार एक धर्मचक्कर एक,
तप कर्मचूर भी कराया दादीसा, तपस्यामय...। १० ।
वर्षीतप लड़ी तीर्थंकरां री,
बेला परदेशी राजा रा कराया दादीसा, तपस्यामय । ११ ।
चोपन सावण एकान्तर कीन्हा,
चार भादवा बेला थे कराया दादीसा, तपस्यामय...। १२ ।
अठारह तक री हर एक तपस्या,
एक इकतीस दिवस कराया दादीसा, तपस्यामय । १३ ।
बेले सूं बारह तांई कई बार कीन्हा,
वास चार हजार लिख पाया दादीसा, तपस्यामय । १४ ।
एकत अलूणो अमल अभिग्रह,
संवर पौषध बहुत कराया दादीसा, तपस्यामय...। १५ ।
दर्शन सामायिक सूत्र सुननो,
थांरै सदां सूं ही मन भाया दादीसा, तपस्यामय...। १६ ।

शहर सरदार में अणुव्रत बारह व्रत,
संवत नौ में नवमागणि धराया दादीसा, तपस्यामय । १७ ।

उम्र दो कम अस्सी वर्ष री,
थे तो द्रव्य इकावन रखाया दादीसा, तपस्यामय...। १८ ।
गण गणि में थांरी श्रद्धा है गहरी,
गुरु तुलसी रा दिल हरषाया दादीसा, तपस्यामय...। १६ ।
रामजी है राजी पोता पड़पोता,
थांरे आंगणिये आनन्द छाया दादीसा, तपस्यामय...। २० ।
संवत चौतीसे चैत पूनम नैं,
गोते 'गणपत' गाथा ए बणाया दादीसा, तपस्यामय...। २१ ।

(लय–राणोजी रूठ्यां म्हारो काई करसी)

भिक्षु स्वामी रो जयवन्तो शासन,
पायो छोगांसुत कालूगणिराया दादीसा, तपस्यामय... । ७ ।
लगन लगी तपत्याग में थांरी,
अस्सिये सूं चौविहार कराया दादीसा, तपस्यामय...। ८ ।
छोड़ी लिलोती पिचियासिये सूं
चारों खंधक निव्विये छोड़ाया दादीसा, तपस्यामय...। ९ ।
कण्ठहार एक धर्मचक्कर एक,
तप कर्मचूर भी कराया दादीसा, तपस्यामय...। १० ।
वर्षीतप लड़ी तीर्थंकरां री,
बेला परदेशी राजा रा कराया दादीसा, तपस्यामय । ११ ।
चोपन सावण एकान्तर कीन्हा,
चार भादवा बेला थे कराया दादीसा, तपस्यामय...। १२ ।
अठारह तक री हर एक तपस्या,
एक इकतीस दिवस कराया दादीसा, तपस्यामय । १३ ।
बेले सूं बारह तांई कई बार कीन्हा,
वास चार हजार लिख पाया दादीसा, तपस्यामय । १४ ।
एकत अलूणो अमल अभिग्रह,
संवर पोषध बहुत कराया दादीसा, तपस्यामय...। १५ ।
दर्शन सामायिक सूत्र सुननो,
थांरै सदा सूं ही मन भाया दादीसा, तपस्यामय...। १६ ।

शहर सरदार में अणुव्रत बारह व्रत,
संवत नौ में नवमागणि धराया दादीसा, तपस्यामय । १७ ।
उम्र दो कम अस्सी वर्ष री,
थे तो द्रव्य इकावन रखाया दादीसा, तपस्यामय...। १८ ।
गण गणि में थांरी श्रद्धा है गहरी,
गुरु तुलसी का दिल हरषाया दादीसा, तपस्यामय...। १९ ।
रामजी है राजी पोता पड़पोता,
थांरै आंगणिये आनन्द छाया दादीसा, तपस्यामय...। २० ।
संवत चौतीसे चैत पूनम नै,
कोते 'गणपत' गाथा ए बणाया दादीसा, तपस्यामय...। २१ ।

(लय—राणोजी रूठ्यां म्हारो काई करसी)

## अनशन प्रेरणा

गुलगुलियां री लाडली, चोपड़ा कुल बहु आप,
दादीसा ! भिक्षु-भिक्षु थे सुमरोजी । ध्रु० ।
अनमोली मिनखा जूण मिली, मिल्यो मिल्यो भिक्षु रो पंथ
दादीसा... । १ ।
भिक्षुरो पंथ तेरापंथ ओ, है जिन वाणी रो रूप,
दादीसा... । २ ।
घणी गई रही थोड़ी जिंदगी, रहज्यो धर्म में मसगूल,
दादीसा... । ३ ।
धीरे-धीरे ममता मोह पर, लगाओ थे अब तो लगाम,
दादीसा... । ४ ।
कांई तो भरोसो ईं नाड़ रो, कुण जाणे कद छोड़े साथ,
दादीसा... । ५ ।
मृतकभोज अरु गांगेड़ा, आडम्बर अन्धविश्वास,
दादीसा... । ६ ।
जीते जी दो सीखड़ी, रखे सब सादगी रो ध्यान,
दादीसा... । ७ ।
अन्त समय अनशन निर्जरा, करके पाइज्यो सुखधाम,
दादीसा... । ८ ।
'गणपत' आतम उजारज्यो, और उजारमा कुल नाम,
दादीसा... । ९ ।

(लय—सपनो)

## शरणो

आछो अरिहन्ता रो शरणो,
हरदम अरिहन्त नै सुमरणो,
सुमरयां होसी पार उतरणो,
प्यारा दादीसा हो, बूढ़ा दादीसा ॥ १ ॥

शुद्ध मन सिद्धां नै जो ध्यावै,
मुक्तिगढ़ री टिगटां पावै,
फंदो जन्म-मरण मिट जावै,
प्यारा दादीसा......॥ २ ॥

आचारज जो पथ दिखलावै,
जो नर अन्तर्दिल अपनावै,
निश्चित शान्त सुधारस पावै,
प्यारा दादीसा......॥ ३ ॥

उपाध्याय सदा सुखकर्त्ता,
साचे शास्त्रां रा प्रवक्ता,
शरणे आयां रा दुःखहर्ता,
प्यारा दादीसा......॥ ४ ॥

आदर साध सत्यां रो करसी,
पांच महाव्रतां नै नमसी,
बांरे धर्म बेलड़ी फलसी,
प्यारा दादीसा......॥ ५ ॥

आछो जैन धर्म सुखदायो,
वीर जिनेश्वरदेव चलायो,
बांरो पथ भिक्षु अपनायो,
प्यारा दादीसा......॥ ६ ॥

तुलसी भिक्षुपथ रखवारो,
कर रह्यो जन जन रो उद्धारो,
'गणपत' राखो शरणो बांरो,
प्यारा दादीसा......॥ ७ ॥

(लय— धरती धोरां री)

# आत्मा री हुण्डी

इक दिन आत्मा री हुण्डी आ सिकरसी दादीसा ।
इक दिन पींजरे रो पंछीड़ो ओ उड़सी दादीसा । ध्रु. ।
जीयो तो भिक्षु-भिक्षु सुमरणो
मरणे सूं नहीं तिल भर डरणो
सुबह उगसी वो ही तो संध्या ढलसी दादीसा ॥१॥
सारी उम्र मन तपस्या में लाग्यो
काया रो कस सागीड़ो काढ्यो
थांरे तप रो इतिहास अमर बणसी दादीसा ॥२॥
गण-गणि में थांरी श्रद्धा-भक्ति
संत सतियां देख्यां जागै फूर्ति
भक्ति भावना री वातां चेते रहसी दादीसा ॥३॥
उम्र अस्सी वर्षां री पाया
पोता पड़पोता आंगण सुहाया
गुरु चौमासे-सा मौका कद मिलसी दादीसा ॥४॥
समता धारो ममता नै मारो
मौत बाई नै अब ललकारो
अबै हिम्मत रा घन छायां सुख मिलसी दादीसा ॥५॥
कहे गणपत करके संथारो
काया उजारो बाजी मारो
"कुळ" चोपडां रो नाम ऊंचो करसी दादीसा ॥६॥
(लय-म्हारे आंगणिये में

## सन्तवाणी (दोहा)

—मुनिश्री मूलचन्द 'मराल'

सुगनी देवी नाल की, गुलगुलिया परिवार ।
मगनीरामजी की सुता, माता जीया सुखकार । १ ।

ब्याही गंगाशहर में, चेतन सुतकिस्तूर ।
मंगल के बाजे बजे, खुशी हुई भरपूर । २ ।

दो बालक इक बालिका, माता बनी उदार ।
(पर) बालक वय में चल बसे, प्रगटा दुःख अपार । ३ ।

कुछ टाईम के बाद में, पति का हुआ वियोग ।
आयु पच्चीस वर्ष की, कैसा मिला संयोग । ४ ।

गुलाबचन्दजी चोपड़ा, दतक पुत्र के रूप ।
सेवा में संलग्न रहे, ईच्छा के अनुरूप । ५ ।

तपस्यामय जीवन बना, मासखमण तप एक ।
लड़ी अठारह तक करी, जागृत हुआ विवेक । ६ ।

संघ संघपति के प्रति, श्रद्धा थी बेजोड़ ।
तपस्या होती ग्राम में, करती होड़ा होड़ । ७ ।

पचरंगी में पांच का, सतरंगी में सात ।
नवरंगी में नौ किये, रखते ऊंची बात । ८ ।

# स्मृति गान

संथारे में दादीसा थे कीन्हो स्वर्गप्रयाण ।
(पण) खिलतो ही रहसी थांरै तप रो उद्यान ! ध्रु० ।

धर्म ध्यान री जद स्यूं थांरै समझ पड़ी ।
गण गणि में थांरी श्रद्धा चौसठ घड़ी खरी ।
जीवन भर म्है नहीं बिसरां, थांरै तपस्या रो एहसान ॥१॥

सतावन सावण एकान्तर आप किया ।
धर्मचक्कर, वर्षीतप, कर्मचूर भी किया ।
चोपड़ा-कुल सम्मान बढ्यो है, थांरै तप रे ताण ॥ २ ॥

बुढ्ढापे में बीमारी बदलो लीन्यो ।
हट्टे-कट्टे पोते नैं डस काल लियो ।
समभावां सब सही आफतां, बणकर समतावान ॥ ३ ।

त्याग तपस्या में अर्पण सारो जीवन ।
जोधा ज्यूं थे रह्या जूझता अन्तिमक्षण ।
चैत चौथ मुनि मूल-प्रेरणा, पायो शिव सुखधाम ॥ ४ ॥

शुद्ध भावना दादीसा थांनै सुमरां ।
दत्तकपुत्र पोता-पोती बहुआं सारा ।
"गणपत" मिलजुल गावां दादीसा रो स्मृति-गान ॥ ५ ॥

(लय- बार-बार तोहे क्या समझायें पायल की झन्कार)

# द्वितीय खण्ड

## (स्वर्गीय बन्धु—श्री लिखमीचन्द)
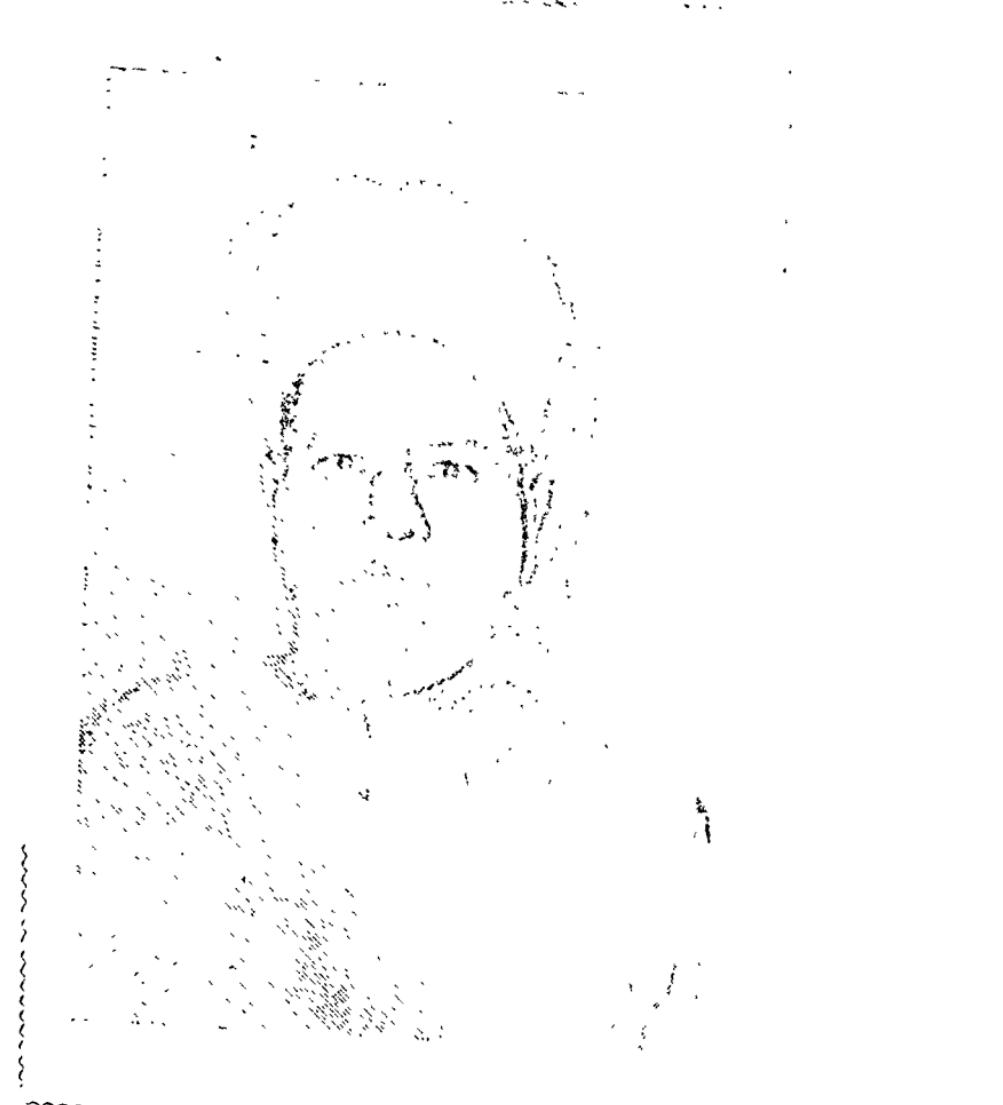
## स्वर्गीय लिखमीचन्द चोपड़ा

(सं० १९८८—सं० २०३६)

लिखमीचन्द गुलाबसुत, असमय स्वर्गप्रयाण ।
जागृत जीवन में करी, परमधर्म पहिचान ।।

—आचार्य श्री तुल

## मत-सम्मत

लिखमीचन्द गुलाब सुत, असमय स्वर्गप्रयाण ।
जागृत जीवन में करी, परमधर्म पहिचान ॥

**—आचार्य श्री तुलसी**

लिखमीचन्दजी अच्छे मिलनसार व्यक्ति थे, गण-गणि के प्रति उनमें अच्छी श्रद्धा थी ।

**मुनिश्री जंवरीमल**

आता वह जाता सही, नहीं इसमें संदेह ।
कुछ करके जो गुजरता, पाता परम स्नेह ॥
लिखमीचन्दजी चोपड़ा, श्रावक निष्ठावान ।
संघ संघपति दृष्टि का, रखते पूरा ध्यान ॥
दृढ़धर्मी श्रद्धालुता, थी उनकी बेजोड़ ।
बात-बात में संघ का, रखते ऊंचा तोर ॥
जन्मे गंगाशहर में मृत्यु मध्य प्रदेश ।
वर्ष अड़तालीस आसरे, जीवनलीला शेष ॥

**—मुनिश्री मूलचन्द**

गृहस्थकाल में लिखमीचन्द के साथ में काफी काम पड़ा क्योंकि एक ही मोहल्ले में दोनों का घर था। मैंने उसको हरदम हंसमुख ही देखा। उसकी मिलनसारिता और शासन के प्रति आस्था अविस्मरणीय है।

—मुनिश्री पूर्णचन्द

मजाकी जीवन सदा, हंस हंस करता बात।
मिगसर बिद दशम निशि, तज्यो अचानक गात ॥
अपने निकट संबंधी की, बलती देखे आग।
तो पिण बेठे जीव नै, आवै नही वैराग ॥
कुवा दे मोटा करचा, घणी करी रिछपाल।
वंह माइत रोता रह्या, बेटो कर गयो काल ॥

—साध्वी श्री पन्ना

# अविश्वसनीय मृत्यु

मौत के काले और सर्द पंजों के आगे मनुष्य विवश है। मृत्यु जीवन की अनिवार्य परिणति है परन्तु यह परिणति कभी कभी अकाल झंझावत की तरह इतने आकस्मिक और निर्ममरूप से आ धमकती है कि मानव मन सहज ही उद्वेलित हो उठता है। आकस्मिक निधन नियति का क्रूर व्यंग है। यही व्यंग होता है चोपड़ा परिवार (गेरसर वास, गंगाशहर) में। दिनांक १४ नवम्बर १९७९ की शाम को लगभग ६ बजे ग्राम कोरबा (मध्यप्रदेश) में सिर्फ अड़तालीस वर्ष की उम्र में ही बड़े भाई जी श्री लिखमीचन्दजी का स्वर्गप्रयाण। सारा परिवार शोक-मग्न। गहरा दुःख। इक्कयासी वर्ष के दादीसा, तेहत्तर के पिताजी, सत्तर की माताजी और लगभग इन्ही उम्र के सास-श्वसुर के रहते हट्टे-कट्टे, निःरोगी, नौजवान का आकस्मिक निधन हो जाना। इससे बढ़कर गहरा दुःख और क्या हो सकता है। इस आकस्मिक निधन की खबर सुनने वाले को एक बार तो विश्वास ही नहीं होता कि यह घटना सही है। जब कोरबा के डाकघर में तार देने के लिए आदमी भेजा गया तो पोस्ट-मास्टर ने कहा कि तुम्हारा दिमाग खराब है क्या? अभी-

अभी मैं उधर से आ रहा हूं। मास्टर ने बाहर आकर दुकान के सम्मुख एकत्रित भीड़ को देखा तब उसे विश्वास हुआ। बिल्कुल अविश्वसनीय घटना मगर वास्तव में ही भाईजी श्री अपने पीछे अपनी धर्मपत्नि, एक पुत्र एवं तीन पुत्रियां छोड़कर इस संसार से सदा-सदा के लिए चले गये।

## जन्म और शादी

हमारे पूज्य पिताजी श्री गुलाबचन्दजी के हम चार पुत्रों में आप सबसे बड़े थे। वि.सं. १९८८ फाल्गुन शुक्ला ४ को गंगाशहर में माता लाडांजी की कुक्ष से आपका जन्म हुआ। वि.सं. २००४ में गंगाशहर निवासी श्री लूणकरणजी की एक-मात्र पुत्री आशादेवी के साथ आपका विवाह हुआ।

## अध्ययन प्रेमी

अध्ययन के प्रति आपकी अच्छी रुचि थी जो इन दो बातों से स्पष्ट होती है। प्रथम तो जब आप सातवीं कक्षा में थे तो किसी ने ताना मारा कि इतने बड़े हो गये और अभी तक सातवीं में ही पढ़ते हो? आप तन–मन से अध्ययन में जुट गये। दो साथी और मिल गए। श्री पूनमचन्द बोथरा और श्री तोलाराम फलोदिया। आप तीनों ने सातवीं, आठवीं, नवमी और दशमी का कोर्स एक ही वर्ष में अध्ययन करके पंजाब युनिवर्सिटी से मैट्रिक की परीक्षा पास की। बाद में डूंगर कॉलेज से इन्टरमीडियेट की परीक्षा पास की। अध्ययन के प्रति

अच्छी रुचि का ही परिणाम है कि आपका पुत्र मानमल चार्टेड एकाउन्टेन्ट है।

## धर्म प्रेमी

धार्मिक क्षेत्र में आप सदा जागरुक रहे। दर्शन, सेवा, व्याख्यान के समय का पूरा ख्याल रखते। धार्मिक साहित्य वाचन में आपकी पूरी दिलचस्पी रहती। गण गणि के प्रति आपकी गहरी श्रद्धा थी। आचार्यप्रवर की शिक्षा का आप सदा सम्मान करते थे। वि. सं. २०३४ में अपने पुत्र मानमल का पाणिग्रहण संस्कार जैन विधि से करवाया। विवाह के थोड़े दिनों बाद ही सारे परिवार को साथ लेकर जैन विश्व भारती में आचार्य श्री के दर्शन किए। श्री पूनमचंदजी शामसुखा (मुनि श्री पूर्णानन्दजी) के अनुरोध पर आचार्य प्रवर नवदम्पति को शिक्षा फरमा रहे थे। प्रसंगवश मैंने भाईजी को कहा कि आपके घर में नव–वधू आई है, उस खुशी में आपको कुछ संकल्प लेना चाहिये। उसी वक्त आपने और भाभीजी ने आंशिकरूप से ब्रह्मचर्य व्रत पालन का संकल्प लिया।

आपके अनुरोध पर साध्वी श्री रत्नश्री जी कोरबा पधारी। तेरापंथी साधु-साध्वियों का कोरबा पदार्पण प्रथम ही था। आपने बिलासपुर से कोरबा एवं कोरबा से बिलासपुर तक जिम्मेवारी पूर्वक रास्ते की सेवा की। प्रतिवर्ष आप गुरुदेव के दर्शन करते। लगभग सभी साधु साध्वियां आपकी योग्यता से है।

## गुरु दृष्टि

आपके असामयिक निधन से चोपड़ा परिवार में गहरा दुःख है। चोपड़ा परिवार ने एक योग्य व्यक्ति को खो दिया है। ऐसे समय में धर्म और धर्मगुरु ही एकमात्र सहायक होते हैं ऐसा मानकर पूज्य पिताजी ने सारे परिवार एवं सम्बन्धियों को लेकर अमृतसर में गुरुदेव के दर्शन किये। गुरुदेव ने महती कृपा करके अमूल्य समय दिया। आपके आकस्मिक निधन को परिवार के लिए गहरा दुःख बतलाते हुए गुरुदेव ने आपके प्रति बहुत ही मार्मिक दोहा फरमाया जो आप पहले ही पढ़ चुके है। सारे परिवार वालों को धर्म, सत्संग भोजनों में मन लगाने की प्रेरणा देते हुए गुरुदेव ने फरमाया—ऐसे समय में गुलाबचन्दजी ने जो दृढ़ता, धैर्यता का परिचय दिया है, जैन विधि से कार्य सम्पन्न किया है, मैं खुश हूं। सारे समाज के लिये यह अनुकरणीय है।

## श्रद्धाञ्जलि

दिवंगत आत्मा ! आपका स्नेह, वात्सल्य, धर्मपरायणता, मिलनसारिता सदा सबके स्मृतिपटल पर रहेगी। आपको शांति मिले, यही कामना करता है समस्त चोपड़ा परिवार।
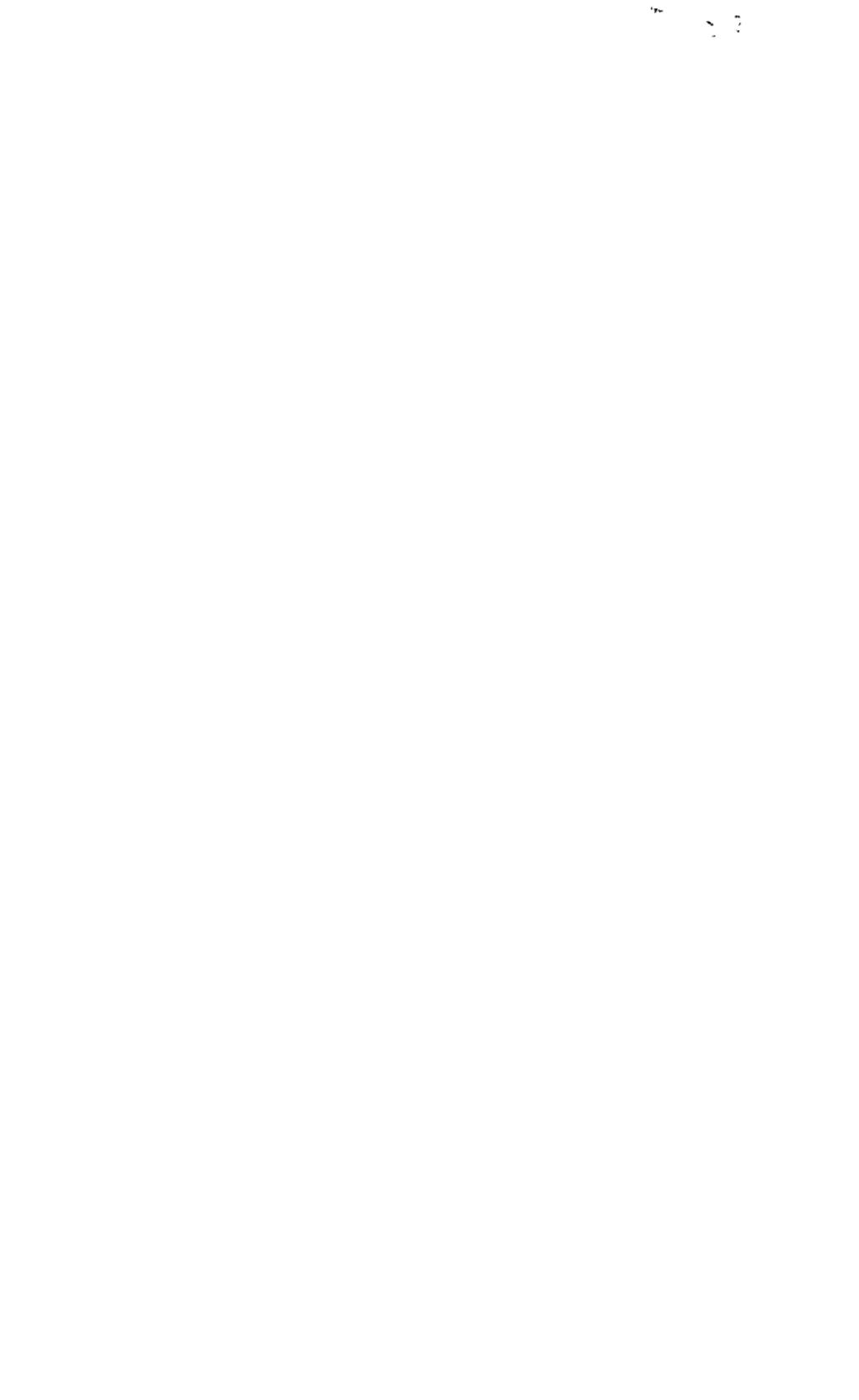
# श्रद्धा सुमन

कितनी आंखें भींग गई, तुम्हारी असामयिक मौत पर।
कितनी दर्द लहरें उठी, तुम्हारी असामयिक मौत पर।
छुप गये तुम अकस्मात स्नेह पाश में बांधकर हमको,
सिर्फ अड़तालीस वर्ष खेलकर इस वसुधा पर ।।

× × ×

तुम नहीं हो मगर तुम्हारी याद अमर है।
तुम नहीं हो मगर तुम्हारा व्यवहार अमर है।
शत शत श्रद्धांजलियां है तुम्हारी स्मृति में तुम्हें,
तुम नहीं हो मगर तुम्हारा प्यार अमर है ।।

# तृतीय खण्ड

## (गणपत-गीतावली)

# १. महावीर महिमा

जैन जगत सरताजजी, कांई त्रिशलासुत महावीर
नमो नमो वीर नै ॥

ममता, माया, राजरिद्धि, कांई छोड़ बण्या रे फकीर,
नमो...॥ १ ॥

अलख जगा आध्यात्म री, कांई पायो जी वीर भवतीर,
नमो...॥ २ ॥

समता क्षमता आपरीजी, कांई बण गई स्वर्ण लकीर,
नमो...॥ ३ ॥

मानव हित सिद्धान्त थांरा, कांई काटै कर्म जंजीर,
नमो...॥ ४ ॥

निर्भय, निर्मल प्रेरणा थांरी, हर रही अंतस पीर,
नमो...॥ ५ ॥

निर्भय बन सब छोड़ दो जी, कांई रूढिवाद रो चीर;
नमो...॥ ६ ॥

गणपत जय जय जैन धर्म, ज्यांरी नींव में वीर महावीर
नमो...॥ ७ ॥

(लय—

## २. भिक्षु स्तुति

जय बोलो दीपानन्दन की ।
जय बोलो कलुषनिकन्दन की ।
जन-जन तारक भिक्षु भगवन को, जय बोलो । ध्रु० ।

निर्भय दृढ़ संकल्पी भिक्षु,
निर्मल निर्मोही था भिक्षु,
था कर्मयोगी प्यारा भिक्षु,
रक्खी न ममता तन-मन की ॥ १ ॥

नहीं कष्टों की परवाह उन्हें,
नहीं शान मान की चाह उन्हें,
केवल प्रिय प्रभु की राह उन्हें,
हुई सफल गति उन चरणन की ॥ २ ॥

गौरवमय भिक्षु का चिन्तन,
यदि चाहते हो सुखमय जीवन,
मानो गुरु आज्ञा अनुशासन,
औषध दी संकटभंजन की ॥ ३ ॥

मर्यादा मूल भीत्ति संघ की,
अति स्वच्छ नीति भिक्षु संघ की,
कथनी करनी सम इस संघ की,
यह दीर्घ दृष्टि उस भगवन की ॥ ४ ॥

जन जन भावन पावन शासन,
मधुवन-सा खिल रहा यह शासन;
गणपत जय-जयकारी शासन;
है श्रेय भिक्षु को इस गुलशन की ॥ ५ ॥

(लय—ॐ शान्ति जिनेश्वर शान्ति करो)

# ३. वदना रा कंवरा

खम्मा-खम्मा हो माता वदना रा कंवरा ।
थांनै तो ध्यावै आखो राजस्थान हो, आखो हिन्दुस्तान हो,
माता वदना रा कवरा ।। ध्रु० ।।

नाम भी हो आप घनश्याम म्हारा आप ही ।
विषपान अमृतदान देने वाला आप ही ।
हो स्वामी ! हर घड़ी हिवड़ें में छाय रह्या ।।१।।

संघ रे विधान री थे कलि-कलि खोलकर ।
भूख-प्यास ख्याल तज रात दिन एक कर ।
हो स्वामी ! भिक्षु री बाड़ी सरसाय रह्या ।।२।।

मानवता रे मान तांई नित नई प्रेरणा ।
जैन विश्व भारती लावेली नई चेतना ।
हो स्वामी ! विसर्जन पाठ पढाय रह्या ।।३।।

प्रजा में भी नेता में भी चर्चा चाले आपरी ।
देश में विदेश में भी मांग बढ़ी आपरी ।
हो स्वामी ! बुद्धिजीवियां रे चित्त चढ रह्या । ४।।

एक बार जो भी मानव देख्यो सुणियो आपनै ।
बुराइयां रो झड़ापो जो चाढ दियो आपनै ।
हो बांरै ! आठूं ही पहर सुख छाय रह्या ।।५।।

मानव-मानव भाई-भाई थांरी मीठी वाणियां ।
सुण पासी पग-पग तुलसीसीख मानियां ।
हो स्वामी ! गणपत गुरु गुण गाय रह्या ।।६।।

**(लय—खम्मा-खम्मा हो धणियां रूणिचे रा)**

## ४. दीवलो दीपां रे दुलारे रो

दीवलो दीपां रे दुलारे रो सदा ही जगसी ।
डको तेरापंथ पंथ रो सदा ही बजसी । ध्रु० ।

धर्म बतायो गुरु आज्ञा में,
सत सति रहो मर्यादा में,
मान मर्यादा रो मानसी, बो गण में रहसी ॥ १ ॥

साम्प्रदायिकता नहीं है गण में,
जात पांत ने ठौर न जिण में,
तेरापंथ मानव पंथ हरियो भरियो रहसी ॥ २ ॥

स्वार्थ कारण मर्यादा तोड़े,
लाज शर्म गण गणि री छोड़े,
निज पगां पर कुल्हाड़ी मारयां पग कटसी ॥३॥

भिक्षु बाड़ी रो तुलसी संरक्षक,
चरणां में च्यारुं तीर्थ मस्तक,
क्यों ना स्वामीजी रे संघ रो सम्मान बढसी ॥४॥

मानव हित नित तुलसी रो चिन्तन,
जैन संस्कार विधि तुलसी रो चिन्तन,
थांरी आछी आछी बातां गणपत जोश भरसी ॥५॥

(म्हांरे आंगणिये में तुलसी)

## ५. जय तेरापंथ

जय बोलो तेरापंथ री।
आ भिक्षु री सहनाणी रे, जय बोलो तेरापन्थ री,
जिन वाणी रो रूप तेरापंथ, भिक्षु री कुर्बानी रे।
जय...। ध्रु०।

१

वगड़ीपुर में रामनवमी दिन, साची बाट पिछाणी रे। जय
आ,षाढ़ पूनम अंधेरी ओरी, दिखलाई मरदानी रे। जय

२

मर्यादामय संघ थरपियो, वातां लिख गया स्याणी रे। जय
काण गुरु री आण संघ री, सबसूं मोटी मानी रे। जय

३

संत सती अलबेला गण में, तुलसी सा गणमाली रे। जय
झोंपड़ियां सूं राजभवन, पहुँचा दी भिक्षु वाणी रे। जय

४

हरे भरे ईं धर्म संघ री, राखो सब निगरानी रे। जय
आंधी भतूलिये में कदै न छोड़ो, मर्दां थे मरदानी रे। जय

५

संघ री शान शान है स्वयं री, समझै बो है ज्ञानी रे। जय
लाखीणो तेरापंथ मिलियो, गणपत आ पुनवानी रे। जय

**(लय—मत बाये म्हारा परण्या जीरो)**

## ६. प्रभु भजले

भजले प्रभु को भजले, तूं प्रीत प्रभु से करले,
सुधरे भव-भव प्रभु भजने से सत्पुरुषों की सुणले,
भजले प्रभु को भजले ॥ अ० ॥

मूंघा मोली मिनखाई, बड़े भाग सूं है पाई,
वार-वार ना हाथ लगै, सत्पुरुषों नै वतलाई,
अवसर रो तूं लाभ उठा, चित्त को प्रभु भजनों में लगा
चूक्यां पीछे पछतावेलो, चेत चेत रे पगले ॥ १ ॥

तूं-तूं मैं-मैं मत कर तूं, अभिमान में मत रह तूं,
आलस दम्भ त्याग करके, सत्संगत में लगजा तूं,
कामी कपटी पछतासी, धर्मी सदा ही सुख पासी,
शांत सुधारस मिल जासी, तूं धर्म ध्यान कुछ करले ॥२॥

इक दिन डेरा उठ जासी, लोग मुसाणा ले जासी,
ज्यांने कहतो म्हांरो तूं, लकड़ां में तनै बैठासी,
शिर पर मारेला लठकी, टाबर टोली तेरे घर की,
कहता गणपत अब भी वक्त निकाल प्रभु को जपले ॥३॥

(लय—बच्चो मन के सच्चो)

## ७. असार संसार

मनवा चेत-चेत रे प्यारे, उम्र पल-पल बीती जाय ।

१. लख चौरासी भटकत-भटकत पायो कंचन काय ।
बार-बार ना हाथ लगै, तू मतना व्यर्थ गमाय ।।

२. सत्संगत तनै लागै खारी, धर्म सूं छींका आय ।
तेल फुलेल में मस्त बण्यो तूं, मुक्ति किण विध पाय ।।

३. कठै सूं आयो कठै तूं जासी, के लायो ले जाय ।
धर्म नाम री बांध गांठड़ी, साथे आ ही जाय ।।

४. मूंघा मोली है मिनखाई, इण रो लाभ उठाय ।
भूंडा कर्‌यां भोगना फूटसी, गणपत रह्‌यो बताया ।।

**(लय—मनवा चेत चेत रे)**

# ८. स्वामीजी रो नाम

स्वामीजी ! थांरो नाम, आखी दुनियां ध्यावै है,
कि ध्यायां आनन्द आवै है, हिये में हर्ष न मावै है। ध्रु०।

हो रही सारे जग में. तेरापंथ री जयति जयति।
तेरापंथ री नींव मांहि श्री भिक्षु री आहुति।
भिक्षु री बलिदान कथा, विसरी नहीं जावै है ॥१॥

विजय ध्वजा भिक्षु बाणी री फहरै च्यारां कानी।
अमर रहेला भिक्षु तेरी गौरवशाली वाणी।
भिक्षु एक बार फिर आओ, संघ बुलावै है ॥२॥

प्रगट्या थांरै पट आचारज, एक एक सूं बढकर।
मस्त रह्या शासन सेवा में, सर्वस्व अर्पणकर।
श्री तुलसी पूर्वाचार्यां री शान बढ़ावै है ॥३॥

सदा रहीज्यो हरी भरी आ संघ सम्पदा थांरी।
स्वर्गलोक सूं थे भी करज्यो शासन री रखवारी।
गणपत गौरवमय गणपति, गुण गाथा गावै है। ४॥

**(लय—माताजी थांरै आंगणे)**

## ६. पंथप्रवर्तक भिक्षु

ओ पंथ प्रवर्तक जन-जन प्यारे भिक्षु,
जिन पथ का सच्चा राही, बुझती चिराग जलायो,
समझ मैं बारम्बार । हो! पंथ प्रवर्तक ॥ ध्रु० ॥

डीगना नहीं सीखा प्रण से मान या अपमान हो ।
जिन शासन शान खातिर गौण खान-पान हो ।
सत्पथ पर चलते चाहे प्राणों की कुर्बान हो ।
रण में रजपूत जैसे, प्रण में मजबूत वैसे,
तुझे क्या चढाऊं उपहार ॥ १ ॥

आई बाधाएं किन्तु थिर था अपनी आण में ।
क्या-क्या गिनाऊं बाधा, रहा तू शमशान में ।
सीखा नहीं झुकना, मुड़ना झूठों के तूफान में ।
सत्य नहीं छुप सकता है, कैसे कहो टिक सकता है,
सूर्य के आगे अन्धकार ॥ २ ॥

दीपां-दुलारे हमको तेरा ही आधार है ।
नैया खेवैया तूं ही, तूं ही पतवार है ।
तेरे ही श्रम से तेरापंथ जय-जयकार है ।
चंदा की चांदनी सम, बढे तेरापंथ हरदम,
गणपत की यह पुकार ॥ ३ ॥

(लय—ओ पवन वेग से उड़ने)

# १०. भिक्षु भजन

ध्याओ नित उठ ध्याओ, श्री भिक्षु स्वाम को ध्याओ ;
उनके आदर्शों को दैनिक जीवन में अपनाओ । ध्रु० ।

जिनपथ अनुगामी भिक्षु, संयम में रत थे भिक्षु,
सत्य अहिंसा के पथ पर, शहीद हुए प्यारे भिक्षु,
भिक्षु की वह कुर्बानी, भिक्षु की मीठी वाणी,
अन्तर्दिल में अपना करके, अन्तज्योंति जगाओ ।। १ ।।

श्रद्धा रग-रग में रत हो, निंदक की नहीं संगत हो,
कदम-कदम पर शुद्ध मन से, गुरु इंगित का स्वागत हो,
विनय, विवेक अरु अनुशासन, भैक्षव गण का आभूषण,
इस आध्यात्मिक आभूषण से, जीवन खूब सजाओ ।।२।।

जन-जन भावन यह शासन, बढ़ा बढे यह भैक्षव गण,
तेरापंथ की सुषमा में, भिक्षु ! तेरा ही चिन्तन,
जय भिक्षु जय तेरापंथ, जय तुलसी जय हो अणुव्रत,
गणपत गौरवमय गण गणपति गौरव गाथा गाओ ।।३।।

(लय—बच्चे मन के सच्चे)

## ११. सच्चे गुरु

थांरै गांव गुरु आया, सत्संग करलो।
गुरु तुलसी है आया, सत्संग करलो ॥ ध्रु० ॥

ए तो बाल ब्रह्मचारी बालयोगी गुरुजी,
ऐसे बालयोगीजी रा दर्शन करलो ॥ १ ॥

ए तो तेरापंथ नेता जिन धर्म रा प्रणेता,
महावीर रो संदेशो थाप थाप सुणलो ॥ २ ॥

ए तो अहिंसा रू सत्यरा पूजारी है पूरा,
कांई लेवै कांई देवै जरा ध्यान धरलो ॥ ३ ॥

ए तो सोनो नहीं मांगै, ए तो चांदी नहीं मांगै,
थांरी खोटी खोटी आदतां झोली में भर दो ॥ ४ ॥

आंनै जमीं नहीं चहीजे, नोट वोट नहीं चहीजे,
थांरै दिलड़े में थोड़ी-सी जगहां कर दो ॥ ५ ॥

ए तो अणुव्रत अलख जगावै घूम-घूम,
अणुव्रतां नै धार उद्धार करलो ॥ ६ ॥

ए तो ज्ञानकुंज, ज्योति पुंज वीर है गंभीर,
कहे गणपत ज्ञान मोती वेगा चुगलो ॥ ७ ॥

**(लय–सासु लड़ मत, लड़ मत)**

# १२. भिक्षुगण-सांवरिया

जुग जुग जीयो भिक्षुगण रा सांवरिया ।
थे हो मन मन्दिर रा भगवान प्रभुजी, हो भगवान प्रभुजी
भिक्षुगण रा सांवरिया ॥ ध्रु० ॥

जन-जन मन मोहे, बदना रा नन्दजी ।
जंगल में भी मंगल जठै पहुंच्या प्रभु चरणजी ।
हो स्वामी ! साखी इयाराकेम्प वाली रतियां ॥१॥

अणुबम युग में अणुव्रत देण आपरी ।
रामबाण औषध है आ चारित्र निर्माण री ।
हो स्वामी ! स्वागत करै है इण री सारी दुनिया ॥२॥

अन्धरूढ्यां पर गुरु तुलसी रो प्रहार है ।
ऊंच-नीच भेदमुक्त तुलसी रो दरबार है ।
हो स्वामी! मिनखां रे खातर खुल्लो चौसठ घड़ियां॥३॥

घणा रे वर्षां सूं अबके पायो म्है सम्मान है ।
गंगाशहर बण्यो तेरापंथ तीर्थस्थान है ।
हो स्वामी ! तीर्थ राखो सदा तिरिया-मिरिया ॥४॥

गली-गली रंगरली तपस्या री लागी है ।
प्रभु दया नई पीढ़ी नई फूर्ति जागी है ।
हो स्वामी ! गणपत सेवक तूं है सांवरिया ॥५॥

**(लय – खम्मा-खम्मा रहो धणिया रूणेचे रा)**

# १३. कालजिये री कोर तुलसी

म्हांरे कालजिये री कोर गणिराज तुलसी ।
म्हारै माथे रो है मोड़ गणिराज तुलसी ।। ध्रु० ।।

तुलसी वाणी में शक्ति संबल है ।
तुलसी आशीशां सदा सफल है ।
प्रेक्षा ध्यान-शिविर साधक आ मंजूर करसी ।।१।।

अणुव्रतां री अलख जगावे ।
विसर्जन रो पाठ पढावै ।
नेड़ो तुलसी रे आसी वो तो हल्को बणसी ।।२।।

मानव हित नित नव उद्बोधन ।
जैन संस्कार विधि अनुपम चिन्तन ।
गुरु सीख हिये धारसी वो सुख वरसी ।।३।।

बालक वूढ्ढा हो चाहे युवक ।
तुलसीमंडी रा बण जावो ग्राहक ।
कहे गणपत ताजो ताजो माल मिलसी ।।४।।

(लय-म्हारै आंगणिये में तुलसी)

# १४. स्वागत गीत

प्यारे मुनिजी भावभोना. है स्वागत तेरा ॥ध्रु०॥

वहुत दिनों से प्यासे दिलों को,
तृप्त आज कर दीन्हा ॥१॥

कष्टों को तज यहां पर आकर,
सबको ही खुश कर दीन्हा ॥२॥

छोटा सा है यह हमरा नगरवा,
पावन तूने कर दीन्हा ॥३॥

है आभारी जनता यहां की,
स्वर्णिम अवसर जो दीन्हा ॥४॥

संत जनों का स्वागत करना,
काम वहुत ही है झीणा ॥५॥

श्रद्धा सुमन सु-मन से चढाकर
स्वागत गायन गा दीन्हा ॥६॥

(लय दुपट्टा मेरा)

# १५. महावीर जन्म जयन्ती

त्रिशलासुत श्री महावीरजी, जग जन्म जयन्ती मनावै
जन्म जयन्ती मनावै, जन-जन रो मन हरषावै ।।त्रि

१

चैत त्रयोदश सारे जग में, ल्यायी नव उजियारो ।
जैन जगत में ऐतिहासिक है, वीरजन्म सुप्यारो ।
हुयो हर्षित जैन समाज जी,
हर्षित इन्द्रादिक आज जी,
ज्योतिपुंज महावीर प्रभु री, महिमा सगला गावै ।
ओ त्रिशलासुत श्री महावीरजी, जग जन्मजयन्ती मनावै ।

२

संयम समता साम्यवाद रो, वहतो दिल में दरियो ।
विघ्न विपद में भी म्हारा प्रभुवर धीरज कबहु न तजियो ।
कानां कीलां री चोट जी ।
तन पै कुपित चंडकोषजी ।
सुण-सुण अजब अजब विपदावां, रूं-रूं खडा हो जावै ।
ओ त्रिशलासुत श्री महावीरजी, जग जन्म जयन्ती मनावै ।।

३

एक घाट पर सिंह अरु गायां साथे पीता पानी ।
बोल रह्या इतिहास पृष्ठ, कल्याणकथा चंदनारी ।

सारो थाँरो उपकारजी,
जंन जगत श्रृंगारजी,
विश्वमैत्री सिद्धान्त प्रभु रा, प्राणी मात्र मन भावै ।
ओ त्रिशलासुत श्री महावीरजी, जग जन्म जयन्ती मनावै ॥

४

आस्तिक नास्तिक, धर्मी-अधर्मी, सवरा थे परमेश्वर ।
सदा शाश्वत जंन धर्म, प्रभु थांरै आदर्श पर ।
थांरो एक एक आदर्शजी,
धारे यदि नर सहर्षजी,
मानव जीवन सदा-सदा, सुख शान्तिमय बन जावे ।
ओ त्रिशलासुत श्री महावीरजी, जग जन्म जयन्ती मनावै ।

५

अन्ध रूढियां आडम्बर नै, कदै न प्रश्रय दीन्हो ।
जीयो जीने दो रो मंत्र, शंखनाद प्रभु कीन्हो ।
प्रभु चरणां में उपहारजी,
ल्यो श्रद्धा भक्ति स्वीकारजी,
गणपत जन्म जयन्ती पर, महावीर महिमा गावै ।
ओ त्रिशलासुत श्री महावीरजी, जग जन्म जयन्ती मनावै ॥

(लय–मारूजी ! थांरै देश में)

## १६. महावीर का सहारा

मन ले ले सहारा महावीर का, वीर ही सहारा भवतीर का
मिटे फंदा कर्म जंजीर का, वीर ही सहारा भवतीर का। ध्रु०।

१

सति चन्दन–बंधन काटे, अर्जुन माली को तारा।
शिव शंभु बन गये प्रभुजी, जब चण्डकोष डंक मारा।
जाप जपो ऐसे रणवीर का।

२

तुम मानवता के मसीहा, तुम सत्य अहिंसा पूजारी।
तुम साम्यवाद के नेता, समता की देण तुम्हारी।
ध्यान धरोजी धीर गम्भीर का।

३

सतयुग के संयमराही, जन जन का बन गया प्यारा।
जीवन उज्जवल हो जाये, जो ध्यान लगाये तुम्हारा।
खुल जाये पीटारा तकदीर का।

४

ओ संकटनाशक प्रभुजी, बस ! तेरा ही है सहारा।
गणपत प्रमुदित मन से है, गुण गाता प्रभुजी तुम्हारा।
गुण गाओ सभी महावीर का।

**(लय–रुकजा ! ओ जाने वाली)**

# १७. भिक्षु शासन-सरताज

भिक्षुशासन रा सरताज, प्यारा तुलसीगणि महाराज,
थांनै पट्टोत्सव पर भक्तां रो वधाई सौ-सौ बार,
खम्मा खम्मा हो घणी
भिक्षु शासन रा धणी
नमो नमो तुलसी गणि ॥ ध्रु० ॥

१. वदनाजी रो लाडलो, श्रो लाडांजी रो वीर है।
चदेरी रो चाँद तुलसी, आपणी तकदीर है।
तेरापंथ रा सांवरिया, अभिनन्दन शत-शत बार ॥

२. भादूड़े उतरती नवमी, उम्र कुल बाइस री।
कालूगणि परख्यो होरो, सौंपी डोर संघ री।
श्रो तो उम्र में नानूड़ो, पण बुद्धि रो भण्डार ॥

३. उत्तर सूं दक्षिण में कन्या कंवरी तक थे पूगिया।
थांरै सिद्धान्तां रो स्वागत, कीन्हो बुद्धिजीवियां।
म्हांरी जीभ एक थांरी महिमा, गुरुवर अपरम्पार ॥

४. अणुव्रत आन्दोलन आह्वान, विश्व मैत्री भावना।
जैन विश्व भारती रू दलित वर्ग सुधारना।
मानव मानव में रहे ना भेद, थांरा स्वच्छ विचार ॥

५. देखो ! आड़ोसी-पाड़ोसी, आया दूर सूं यात्री।
पट्टोत्सव पर गणपत-प्रेमो गावै गरिमा आपरी।
सति गौरां रे सान्निध्य, नवगांव है गुलजार ॥

[लय - शासन कल्पतरु]

## १८. त्रिशलानन्दन गरिमा

त्रिशलानन्दन कलुषनिकन्दन, जैन जगत सरताज रे,
ध्याऊं प्रभु नै शुद्ध भावना ॥ ध्रु० ॥

संकटनाशक पापविनाशक, वीर नाम सुखकारा रे.
प्रभु चरणों में शत शत वन्दना ।
राजघराने जन्म लियो थे, भौतिक रिद्धि अपारा रे,
संसारिक सुख पग पग आपरे ॥ १ ॥

काम भोग थाँनै लाग्या खारा, साधु जीवन प्यारा रे,
अन्तर वैराग जाग्यो आपरे ।
ममता छोड़ी, माया छोड़ी, छोड़ दिया घरद्वारा रे,
चरण बढ़्या है संयम मार्ग पै ॥ २ ॥

त्याग तपस्या में मन लाग्यो, त्रिशलासुत महावीर रो,
समता भावां सूं संयम आदरे ।
चण्डकोप अरु चन्दन बाला, अर्जुनमाली, गोशाला,
प्रभु शरण पायो तीर जी ॥ ३ ॥

समता संयम साम्यवाद में बतलाया सुख सारा रे,
धार्‌यां कटैला दुःख जंजीरजी ।
गुण गावां प्रभु. थांरा "गणपत" हिवड़े हर्ष अपारा रे,
चरणां चढावां श्रद्धा वीरजी ॥ ४ ॥

[लय — तेजो]

# १६. भिक्षु स्मरण

भिक्षु को जो सुमरे, संकट सब ही टरै ।
विघ्न विनाशक, भिक्षु स्मरण से, चित्त में चैन वरै ।ध्रु०।

शास्त्र छाना, सत्य पहचाना,
जिन पथ पै निकल पड़े ॥ १ ॥

कष्टों में अविचल, निर्भय-निर्मल,
भिक्षु सदा ही रहे ॥ २ ॥

त्याग तिहारा, बलिदां तिहारा,
जगमग आज करे ॥ ३ ॥

विनति हमारी, गण रखवारी,
स्वर्ग से करते रहें ॥ ४ ॥

कहता है गणपत, प्रभु तेरापंथ,
पग पग प्रगति करे ॥ ५ ॥

[लय—नील गगन के तले]

## २०. जय त्रिशलानन्दन

जय जय त्रिशलानन्दन, शत शत तुमको वन्दन
तुझे शुद्ध भाव से ध्यायें।
तेरे मधुर-मधुर उपदेशों को, हम जीवन में अपनाए।ध्रु०।

१

चन्दन बंधन टूट गये, प्रभु पाकर दर्श तिहारा।
रूढ़िवाद के बन्धन से, प्रभु मिले हमें छुटकारा।
सत्य अहिंसा के सत्पथ पर, हम सब कदम बढ़ाएं॥

२

प्राणीमात्र से प्रेम करो, अहा ! कैसा चिन्तन तेरा।
(पर) ऊंच-नीच और छुआछूत ने लगा रखा है घेरा।
सबल शक्ति और सद्बुद्धि दो, हम एक मंच पर आए॥

३

हम हैं सेवक तेरे अन्तर्यामी ! स्वामी तुम हो।
राम तुम्ही हो, रहीम तुम्ही हो, सांवरिया भी तुम हो।
सागर में लहरें ज्यों "गणपत" हम तुझ में मिल जाएं॥

[लय—तेरी दो टकियां दी नौकरी]

## चतुर्थ खण्ड

### (जीवनोपयोगी बातें)

# क्या आप जानते हैं ?

* तेरापंथ की स्थापना केलवा की अंधेरी ओरी में वि. सं. १८१७ में आषाढ पूर्णिमा को आचार्य भिक्षु ने की।
* मर्यादा महोत्सव का प्रारम्भ चतुर्थ आचार्य श्रीमद्जयाचार्य ने सं. १९२१ माघ शुक्ला सप्तमी को किया।
* अष्टमाचार्य श्री कालूगणि का स्वर्गवास सं. १९९३ भाद्र शुक्ला छठ को हुआ।
* नवमाचार्य श्री तुलसीगणि का जन्मदिवस कार्तिक शुक्ला द्वितीया है और पट्टोत्सव दिवस भाद्र शुक्ला नवमी है। आप १९८२ में दीक्षित हुए और सं. १९९३ में आचार्य बने।
* अणुव्रत आन्दोलन का प्रवर्तन सं. २००५ में हुआ।
* साध्वी श्री कनकप्रभाजी को साध्वीप्रमुखा का पद सं. २०२८ में गंगाशहर में आचार्यप्रवर द्वारा दिया गया।
* मुनि श्री नथमलजी को सं. २०३५ में गंगाशहर चातुर्मास में आचार्य प्रवर ने महाप्रज्ञ की उपाधि दी।
* मुनि श्री नथमलजी को सं. २०३५ में राजलदेसर में युवाचार्य पद दिया गया और आपका नाम महाप्रज्ञ रखा गया।
* जैन ध्वज में पांच रंग होते हैं। श्वेत रंग अरिहन्त का, लाल सिद्ध का, पीला आचार्य का, नीला उपाध्याय का और काला रंग साधु का प्रतीक है।

# विचित्र किन्तु सही

* स्वामीजी के समय में दो रूपवान साधु जो मामा-भानजे थे, कहीं विहार कर जा रहे थे। जंगल में चोरों ने इन्हें राजपूत समझकर गोली से मार दिया।

* आचार्य भारमलजी ने मुनि श्री वृद्धिचन्दजी को आधी रात को दीक्षा दी।

* मुनिश्री बेणीरामजी को एक दिन में १३ स्थान बदलने पड़े।

* मुनि श्री स्वरूपचन्दजी ने सं. १८७७ में जावोजी को जंगल में गृहस्थ के कपड़ों में ही दीक्षा दी।

* मुनिश्री खूबचन्दजी को हाथ में चांदी के कड़ियों सहित मुनि श्री जावोजी ने दीक्षा दी।

* मुनि श्री तेजमालजी लाडनूं के गोलेछा थे। जयाचार्य ने उनके पिताजी से कह—"तुम गोलेछा और हम गोलेछा". एक पुत्र को गोद दिया ही समझो। तब दीक्षा की स्वीकृति दी एवं सं. १९०० में दीक्षा हुई।

* जयाचार्य ने लालाजी से कहा—मघवा के पीछे उत्तराधिकारी चाहिये। आज्ञा मिलने से सं. १९२८ में जयाचार्य ने माणकगणि को लाडनूं में दीक्षा दी।

* मुनिश्री उदयचन्दजी भिवानी वाले अपनी पत्नि मानकंवरजी को दीक्षा देने के लिए आए थे, पर जयाचार्य के उपदेश से स्वयं

## तेरापंथ के आचार्यों का परिचय

| आचार्यों के नाम | गांव | माता/पिता का नाम | जन्म | दीक्षा | आचार्य पद | स्वर्गवास |
|---|---|---|---|---|---|---|
| श्री भीखणजी | कंटालिया | दीपां/वल्लूजी शाह | १७८३ | १८१७ | १८१७ | १८६० |
| श्री भारमलजी | मूंहा | धारिणी/किशनोजी | १८०४ | १८१७ | १८६० | १८७८ |
| श्री रायचन्दजी | बड़ी रावलिया | कुशलां/चतरोजी | १८४७ | १८५७ | १८७८ | १९०८ |
| श्री जीतमलजी | रोयट | कल्लू/आईदानजी | १८६० | १८६९ | १९०८ | १९३८ |
| श्री मघवागणि | बीदासर | बन्ना/पूर्णमलजी | १८९७ | १९०८ | १९३८ | १९४९ |
| श्री माणिक गणि | जयपुर | छोटां/हुकमचन्दजी | १९१२ | १९२८ | १९४९ | १९५४ |
| श्री डाल गणि | उज्जैन | जड़ावां/कानीरामजी | १९०९ | १९२३ | १९५४ | १९६६ |
| श्री कालूगणि | छापर | छोगां·मूलचन्दजी | १९३३ | १९४४ | १९६६ | १९९३ |
| श्री तुलसी गणि (वर्तमान आचार्य) | लाडनूं | वदना/झूमरमलजी | १९७१ | १९८२ | १९९३ | —— |

## साध्वीप्रमुखा का परिचय

| संख्या | नाम | गांव | प्रमुखापद | स्वर्गवास |
|---|---|---|---|---|
| १ | श्री सरदारांजी | चूरू | सं० १९१० | १९२७ |
| २ | श्री गुलाबांजी | बीदासर | १९२७ | १९४२ |
| ३ | श्री नवलांजी | गुठा | १९४२ | १९५४ |
| ४ | श्री जेठांजी | चूरू | १९५४ | १९८१ |
| ५ | श्री कानकंवरजी | श्रोडूंगरगढ़ | १९८१ | १९९३ |
| ६ | श्री झमकूजी | चूरू | १९९३ | २००२ |
| ७ | श्री लाडांजी | लाडनूं | २००२ | २०२७ |
| ८ | श्री कनक प्रभाजी (वर्तमान) | लाडनूं | २०२८ | —— |

# महत्वपूर्ण दिवस

| | | |
|---|---|---|
| चैत्र शुक्ला १३ | — | भगवान महावीर जन्मदिवस |
| वैशाख शुक्ला ३ | — | अक्षय तृतीया (भगवान ऋषभदेव का पारणा दिवस) |
| वैशाख शुक्ला १० | — | भगवान महावीर का केवल ज्ञान दिवस |
| आषाढ़ शुक्ला १५ | — | तेरापंथ स्थापना दिवस |
| भाद्रव कृष्णा १२ | — | जयाचार्य स्वर्गवास |
| भाद्रव शुक्ला ५ | — | सम्वत्सरी |
| भाद्रव शुक्ला ६ | — | कालूगणि स्वर्गवास |
| भाद्रव शुक्ला ९ | — | आचार्य श्री तुलसी पट्टोत्सव दिवस |
| भाद्रव शुक्ला १३ | — | आचार्य भिक्षु चरमोत्सव दिवस |
| कार्तिक कृष्णा १५ | — | भगवान महावीर निर्वाण दिवस |
| कार्तिक शुक्ला २ | — | आचार्य श्री तुलसी जन्म दिवस |
| मृगसर कृष्णा १० | — | भगवान महावीर दीक्षा दिवस |
| पौष कृष्णा ५ | — | आचार्य श्री तुलसी दीक्षा दिवस |
| पौष कृष्णा १० | — | भगवान पार्श्वनाथ दीक्षा दिवस |
| माघ शुक्ला ७ | — | मर्यादा महोत्सव दिवस |

# श्री मज्जयाचार्यकृत चौबीसी

## चतुर्विंशति जिन-स्तवन

### दोहा

ॐ नमः अरिहन्त अतनु, आचारज उवज्भया ।
मुनि पंच परिमेष्ठि ए, ऊंकार रै मांय ॥ १ ॥
बलि प्रणमूं गुणवन्त गुरु, भिक्षु भरत मझार ।
दान दया न्याय छाण नें, लीधो मारग सार ॥ २ ॥
भारीमाल पट झलकता, तीजै पट ऋषिराय ।
प्रणमूं मन वच काय करी, पांचूं अंग नमाय ॥ ३ ॥
(इम) सिद्ध साधु प्रणमी करी, ऋषभादिक चौबीस ।
स्तवन करूं प्रमोद करी, जय जश कर जगदीश ॥ ४ ॥
मल्लि नेम ए दोय जिन, पाणिग्रहण न कीध ।
शेष बावीस जिनेश्वरू, रमणी छांड व्रत लीध ॥ ५ ॥
वासुपूज्य मल्लि नेम जिन, पार्श्व अनें वर्द्धमान ।
कुमर पदे अरु प्रथम वय, धार्यो चरण निधान ॥ ६ ॥
छत्रपति उगणीस जिन, व्रत तीजी वय सार ।
उत्कृष्ट आयु जिह समय, तसु त्रिण भाग विचार ॥ ७ ॥
वीर समय उत्कृष्ट स्थिति, वर्ष सवासय होय ।
भाग तीन कीजैं तसु, ए तीनूं वय जोय ॥ ८ ॥
इम सगलै उत्कृष्ट स्थिति, त्रिण भागे वय तीन ।
अंतिम वय उगणीस जिन, धुर वय पंच सुचीन ॥ ९ ॥

श्वेत वरण चांद सुविधि जिन, पद्म वासुपूज्य लाल।
मुनिसुव्रत रिठनेम प्रभु, कृष्ण वरण सुविशाल ॥ १० ॥
मल्लिनाथ फुन पार्श्व प्रभु, नील वरण वर अंग।
षोडश शेष जिनेश तनु सोवन वरण सुचग ॥ ११ ॥
श्रेयांस मल्लि मुनिसुव्रतजिन, नेम पाश्व जगदीश।
प्रथम प्रहर दीक्षा ग्रही, पाछिल पहर उन्नीस ॥ १२ ॥
सुमति जीम दीक्षा ग्रही, अठम भक्त मल्लि पास।
छठ भक्त जिन वीस वर, वासुपूज्य उपवास ॥ १३ ॥
ऋषभ अष्टापद शिवगमन, वीर पावापुरी दीश।
नेम गिरनारे, वासु चम्पा, शिखरसम्मेत सुबीस ॥ १४ ॥
ऋषभ संथारै शिवगमन, चउदश भक्त उदार।
चरम छट्ठ अणसण पवर, बावीस मास संथार ॥ १५ ॥
ऋषभ वीर अरु नेमजिन, पल्यंकासण शिव पेख।
शेप इकवीस जिनेश्वरु, काउस्सग मुद्रा देख ॥ १६ ॥
जिन चौवीस तणां सुगुण, रचियै वचन रसाल।
ध्यान सुधा वर सार रस, जय जश करण विशाल ॥ [illegible]

# १ श्री ऋषभनाथ स्तवन

वन्दू बेकर जोड़ नैं, जुग आदि जिनन्दा।
कर्म रिपु गज ऊपरै, मृगराज मुनिन्दा॥
प्रणमूं प्रथम जिनन्द नै, जय जय जिन चंदा॥ १॥

अनुकूल प्रतिकूल सम सही, तप विविध तपदा।
चेतन तन भिन्न लेखवी, ध्यानशुक्ल ध्यावदा॥ २॥

पुद्गल सुख अरि पेखिया, दुख हेतु भयाला।
विरक्त चित विघट्यो इसो, जाण्या प्रत्यक्ष जाला॥३॥

सवेग सरवर झूलता, उपशम रस लीना।
निन्दा स्तुति सुख-दुःख में, समभाव सुचीना॥ ४॥

वासी चन्दन सम पणै, थिर चित जिन ध्याया।
इम तन सार तजी करी, प्रभु केवल पाया॥ ५॥

हूं बलिहारी तांहरी, वाह! वाह!! जिनराया।
इवा दशा किण दिन आवसी, मुझ मन उमाया॥ ६॥

उगणीसै सुदि भाद्रवै, दशमी शीलवारं।
ऋषभ देव रटवे करी, हुवो हर्ष अपारं॥ ७॥

(लय—ऐसे गुरु किम पाविये)

# २श्री अजितनाथ स्तवन

अहो प्रभु ! अजित जिनेश्वर आपरो,
ध्याऊं ध्यान हमेश हो ।।
अहो प्रभु ! अशरण शरण तूं ही सही,
मेटण सकल कलेश हो ।
अहो प्रभु ! तुम ही दायक शिवपंथ ना ।। १ ।।

अहो प्रभु ! उपशम रस भरी आपरी,
वाणी सरस विशाल ।
अहो प्रभु ! मुक्ति निसरणी मनोहरू,
सुण्यां मिटै भ्रमजाल ।। २ ।।

अहो प्रभु ! उभय बंधण आप आखिया,
राग-द्वेष विकराल ।
अहो प्रभु ! हेतु ए नरक निगोद ना,
राच्या मूरख बाल ।। ३ ।।

अहो प्रभु ! रमणी राक्षसणी कही,
विष वल्ली मोह जाल ।
अहो प्रभु ! काम भोग किम्पाक-सा,
दाख्या दीनदयाल ।। ४ ।।

अहो प्रभु ! विविध उपदेश देई करो,
तैं तार्या नर नार ।
अहो प्रभु ! भव-सिन्धु पोत तू ही सही,
तूं ही जगत आधार ॥ ५ ॥

अहो प्रभु ! शरण आयो तुझ साहिबा,
वस रह्या हीया मांय ।
अहो प्रभु ! आगम-वयण अंगी करी,
रह्यो ध्यान तुझ ध्याय ॥ ६ ॥

अहो प्रभु ! सम्वत उगणीसै नें भाद्रवै,
दशमी आदित्यवार ।
अहो प्रभु ! आप तणां गुण गाविया,
वर्त्या जय जयकार ॥ ७ ॥

(लय—हो प्रिय तुम बट पाडो)

——

# 3 श्री सम्भवनाथ स्तवन

सम्भव साहिब समरिये, ध्यायो है जिन निर्मल ध्यान कै।
एक पुद्गल दृष्टि थाप नै, कीधो है मन मेरु समान कै।
सम्भव साहिब समरिये ॥१॥

तन चंचलता मेटने, हुवा है जग थी उदासीन।
धर्म शुक्ल थिर चित धरी, उपशम रस में होय रह्या लीन।२॥

सुख इन्द्रादिक नां सहु, जाण्या है प्रभु अनित्य असार।
भोग भयंकर कटुक फल, देख्या है दुर्गति दातार ॥३॥

सुधा संवेग रसे भर्या, पेख्या है पुद्गल मोह पाश।
अरुचि अनादर आण नें, आतम ध्यानें करता विलास ॥४॥

संग छांड मन वश करी, इन्द्रिय दमन करी दुर्दन्त।
विविध तपे करी स्वामजी, घाती कर्म नों कीधो अन्त ॥५॥

हूं तुझ शरणे आवियो, कर्म विदारण तूं प्रभु वीर।
तें तन मन वच वस किया, दुःकर करणि करण महावीर॥६॥

सम्वत् उगणीसे भाद्रवे, सुदि इग्यारस आण विनोद।
सम्भव साहिब समरिया, पाम्यो है मन अधिक प्रमोद। ७॥

(लय—हूं बलिहारी हो जादवां)

# ४ श्री अभिनन्दन स्तवन

तीर्थंकर हो चोथा जग त्राण,
छांडि गृहवास करी मति निरमली।
विषय विटम्बन हो तजिया विष फल जाण;
अभिनन्दन वांदू नित मनरली ॥ १ ॥

दुःकर करणी हो कीधी आप दयाल,
ध्यान सुधा रस सम दम मन गली।
संग त्यागो हो जाणी मायाजाल,
अभिनन्दन वांदू नित मनरली ॥ २ ॥

वीर रसे करी हो कीधी तपस्या विशाल,
अनित्य अशरण भावन अशुभ निरदली।
जग झूठो हो जाण्यो आप कृपाल,
अभिनन्दन वांदू नित मनरली ॥ ३ ॥

आतम मित्री हो सुखदाता सम परिणाम,
एहिज अमित्र अशुभ भावे कलकली।
एहवी भावन हो भाई जिन गुण धाम,
अभिनन्दन वांदू नित मनरली ॥ ४ ॥

लीन संवेगे हो ध्यायो शुक्लध्यान,
क्षायक श्रेणी चढ़ी हुवा केवली ।
प्रभु पाया हो निरावरण सुज्ञान,
अभिनन्दन वांदू नित मनरली ॥ ५ ॥

उपशम रस भरी हो वागरी प्रभु वाण,
तन मन प्रेम पाया जन सांभली ।
तुम वचधारी हों पाम्या परम कल्याण,
अभिनन्दन वांदू नित मनरली ॥ ६ ॥

जिन अभिनन्दन हो गाया तन मन प्यार,
संवत उगणीसै नें भाद्रवै अघदलो ।
सुदि इग्यारस हो हुवो हर्ष अपार,
अभिनन्दन वांदू नित मनरली ॥ ७ ॥

**(लय—सती कलूजी हो हुवा संयम नै त्यार)**

## ११. श्री श्रेयांस प्रभु स्तवन

मोक्षमार्ग श्रेय शोभता, धार्या स्वाम श्रेयांस उदार रे।
जे जे श्रेय वस्तु संसार में, ते ते आप करी अंगीकार रे ॥
ते ते आप करी अंगीकार, श्रेयांस जिनेश्वरू,
प्रणमूं नित बेकर जोड़ रे ॥१॥
समिति गुप्ति दुःधर घणां, धर्म शुक्ल ध्यान उदार।
ए श्रेय वस्तु शिवदायनी, आप आदरी हर्ष अपार ॥२॥
तन चंचलता मेटनें, पदमासन आप विराज।
उत्कृष्ट ध्यान तणों कियो, आलम्बन श्री जिनराज ॥३॥
इन्द्रिय विषय विकार थी. नरकादिक रुलियो जीव।
किम्पाक फलनी ओपमा, रहिये दूर थी दूर सदीव ॥४॥
संयम तप जप शील ए, शिव साधन महा सुखकार।
अनित्य अशरण अनंत ए, ध्यायो निर्मल ध्यान उदार ॥५॥
स्त्रियादिक ना संग ते, आलम्बन दुख दातार।
अशुद्ध आलम्बन छांडने, धार्यो ध्यान आलम्बन सार ॥६॥
शरण आयो तुझ साहिबा, करूं वार वार नमस्कार।
उगणीसै पूनम भाद्रवी, मुझ वर्त्यो जय-जयकार ॥७॥

(लय—पुत्र वसुदेवनो)

## १२. श्री वासुपूज्य स्तवन

द्वादशमां जिनवर भजिए,
राग द्वेष मच्छर माया तजिए ।
प्रभु लालावरण तन छिब जाणी,
प्रभु वासुपूज्य भज ले प्राणी ॥१॥

वनिता जाणी वैतरणी, शिव सुन्दर वरवा हूंस घणी ।
काम भोग तज्या किम्पाकाणी ॥२॥

अंजन मंजन स्यूं अलगा, बलि पुष्प विलेपन नहीं विलगा ।
कर्म काट्या ध्यान मुद्रा ठाणी ॥३॥

इन्द्र थकी अधिका ओपै, करुणागर कदेई नहीं कोपै ।
घर शाकर दूध जिसी वाणी ॥४॥

स्त्री स्नेह पाशा दुर्दन्ता, कह्या नरक निगोद तणां पंथा ।
इह भव पर भव दुखदाणी ॥५॥

गजकुम्भ दलै मृगराज हणी, पिण दोहिली नित आतम दमणी
इम सुण वहु जीव चेत्या जाणी ॥६॥

भाद्रवी पूनम उगणीसो, कर जोड़ नमूं वासुपूज्य इसो ।
प्रभु गांता रोम राय हुलसाणी ॥७॥

**(लय—इम आप जपो श्री नवकारं)**

# १३. श्री विमलनाथ स्तवन

शरणे तिहारे २ हो विमल प्रभु! सेवक नी अरदास।
आयो शरण तिहारे हो ॥
विमल करण प्रभु विमलनाथजी,
विमल आप वर रीत।
विमल ध्यान धरतां हुवे निर्मल,
तन मन लागी प्रीत ॥ १ ॥
विमल ध्यान प्रभु आप ध्याया,
तिण सूं हुवा विमल जगदीश।
विमल ध्यान वलि जे कोई ध्यासी,
होसी विमल सरीस ॥ २ ॥
विमल गृहवासें द्रव्य जिनेन्द्र था,
दीक्षा लियां भावे साध।
केवल ऊपना भावे जिनेश्वर,
भावे विमल आराध ॥ ३ ॥
नाम स्थापना द्रव्य विमल थी,
कारज न सरै कोय।
भाव विमल थी कारज सुधरे,
भाव जप्यां शिव होय ॥ ४ ॥

गुण गिरवो गम्भीर तूं,
तूं मेटण जग त्रास ।
मैं तुम वयण आगम शिर धार्या,
तूं मुझ पूरण आश ॥५॥

तूं ही कृपाल दयाल साहिब,
शिव-दायक तूं जगनाथ ।
निश्चल ध्यान करै तुझ ओलख,
ते मिले तुझ संघात ॥ ६ ॥

अंतरयामी आप उजागर,
मैं तुझ शरणों लीध ।
संवत उगणीसै भाद्रवी पूनम,
वंछित कारज सिद्ध ॥ ७ ॥

**(लय—कांय न मांगां कांय न मांगां मांगां हो**
**राजाजी मांगां पूरण प्रीत बीजू )**

# १४. श्री अनंतनाथ स्तवन

अनन्तनाथ जिन चवदमां रे,
द्रव्य चौथे गुणठाण, भलांजी कांई ।
भावे जिन हुवै तेरमें रे,
इतले द्रव्य जिन जाण ॥
पायो पद जिनराजनों,
शुद्ध ध्यान निरमल ध्याय ॥
पायो पद जिनराज नों जी ॥ १ ॥

जिन चक्री सुर जुगलिया रे,
वासुदेव बलदेव ।
पञ्चम गुण पावै नहीं,
ए रीत अनादि स्वमेव ॥ २ ॥

संयम लीधो तिण समै रे,
आया सप्तम गुणठाण ।
अंतर मुहूर्त तिहां रही रे,
छठे बहुस्थिति जाण ॥ ३ ॥

आठमां थी दोय श्रेणि छे रे,
उपशम खपक पिछाण ।
उपशम जाय इग्यारमें रे,
मोह दबावतो जाण ॥ ४ ॥
श्रेणि उपशम जिन ना लहै रे,
खपकश्रेणि घर खंत ।
चारित्र मोह खपावता रे,
चढिया ध्यान अत्यन्त ॥ ५ ॥
नवमें आदि संजल चिहुं रे,
अंत समै इक लोभ ।
दशमें सूक्षम मात्र ते रे,
सागार—उपयोग शोभ ॥ ६ ॥
एकादशमो उलंघो नें रे,
बारमें मोह खपाय ।
त्रिकर्म इकसमै तोड़ता रे,
तेरमें केवल पाय ॥ ७ ॥
तीर्थ थाप योग रुंध नें रे,
चउदमां थी शिव पाय ।
उगणीसै पूनम भाद्रवी रे,
अनन्त रट्यां हरपाय ॥ ८ ॥
(लय—पायो युवराज पद मुनि)

# १५. श्री धर्मनाथ स्तवन

धर्मजिन धर्म तणां धोरी, त्रटक मोह-पाश नाख्या तोडी।
चरण धर्म आतम स्यूं जोड़ी, अहो प्रभु धर्म देव प्यारा ॥१॥
शुक्ल ध्यान अमृत रस लीना, संवेग-रसे करी जिन भीना।
प्याला प्रभु उपशम ना पीना ॥२॥
जाण्यां शब्दादिक मोह जाला, रमणि सुख किम्पाक सम काला
हेतु नरकादिक दुख आला ॥३॥
पुद्गल सुख अरि जाण्या स्वामी, ध्यान थिर चित आतम धामी
जोड़ी युग केवल नीं पामी ॥४॥
थाप्या प्रभु च्यार तीरथ तायो, आख्यो धर्म जिन आज्ञा मांयो।
आज्ञा बाहिर अधरम दुखदायो ॥५॥
विरत धर्म धर्म जिन आख्याता, अविरत कही अधरम दुखदाता।
सावद निरवद जु-जुआ कह्या खाता ॥६॥
बहुजन तार मुक्ति पाया, उगणीसै आसू धुर दिन आया।
धर्म जिन रटवे सुख पाया ॥७॥

(लय—भिक्षु पट भारीमाल भलकै)

## १६. श्री शान्तिनाथ स्तवन

शांति करण प्रभु शांतिनाथजी, शिवदायक सुखकन्द की।
बलिहारी हो शांति जिणन्द की ॥१॥

अमृत वाण सुधा-सी अनुपम, मेटण मिथ्या मन्द की।
बलिहारी हो शांति जिणन्द की ॥२॥

काम भोग राग द्वेष कटुक फल, विष-बेलि मोह धन्द की।
बलिहारी हो शांति जिणन्द की ॥३॥

राक्षसणी रमणी वैतरणी, पूतली अशुचि दुर्गन्ध की।
बलिहारी हो शांति जिणन्द की ॥४॥

विविध उपदेश देई जन तार्‌या, हूं वारी जाऊं विश्वनंद की।
बलिहारी हो शांति जिणन्द की ॥५॥

परम दयाल गोवाल कृपानिधि, तुम जप माला आनन्द की।
बलिहारी हो शांति जिणन्द की ॥६॥

सम्वत उगणीसै आसू वदी एकम, शांतिलता सुखकंद की।
बलिहारी हो शांति जिणन्द की ॥७॥

**(लय—हूं बलिहारी भीखणजी साध री)**

## १७. श्री कुन्थुनाथ स्तवन

कुन्थु जिनेश्वर करुणा सागर, त्रिभुवन शिर टीको रे।
प्रभु को समरण कर नीको रे ॥१॥
अद्‌भुत रूप अनूप कुन्थु जिन, दर्शन जग पीको।
प्रभु को समरण कर नीको ॥२॥
वाणी सुधा सम उपशम रसनी, वाल्हो जग जीको।
प्रभु को समरण कर नीको ॥३॥
अनुकम्पा दोय श्री जिन दाखी, मर्म समदृष्टी को।
प्रभु को समरण कर नीको ॥४॥
असंयती रो जीवणो वांछे, ते सावद्य तहतीको।
प्रभु को समरण कर नीको ॥५॥
निरवद करुणा करी जन तार्‌या, धर्म ए जिनजी को।
प्रभु को समरण कर नीको ॥६॥
संवत उगणीसै आसू वदि [illegible], [illegible] साहिबजी को।
प्रभु को समरण कर नीको ॥७॥
(लय—भिक्षु म्हारे प्रगट्या जी भरत खेतर में)

# १८. श्री अरनाथ स्तवन

अर जिन कर्म अरी नां हन्ता, जगत उद्धारण जहाज ।
म्हांनें प्यारा लागे छै जी, अर जिनराज ॥
म्हांनै वाल्हा लागै छै जी अर महाराज ॥१॥

परिषह उपसर्ग रूप अरी हण, पाया केवल पाज ।
म्हांनै बाल्हा लागै छै जी अर महाराज ॥२॥

नयण न धापै निरखतां जी, इन्द्राणी सुरराज ।
म्हांनै बाल्हा लागै छै जी अर महाराज ॥३॥

वारूं रे जिनेश्वर रूप अनुपम, तूं सुगणां सिरताज ।
म्हांनै बाल्हा लागै छै जी अर महाराज ॥४॥

वाण विशाल दयाल पुरुषनी, भूख तृषा जाये भाज ।
म्हांनै बाल्हा लागै छै जी अर महाराज ॥५॥

शरणे आयो स्वाम रे जी, अविचल सुख नें काज ।
म्हांनै बाल्हा लागै छै जी अर महाराज ॥६॥

उगणीसै आसू वदी एकम, आनन्द उपनो आज ।
म्हांनै बाल्हा लागे छै जी अर महाराज ॥७॥

**(लय—देखो सहियां बनड़ो ए नेमकुमार)**

# १६. श्री मल्लिनाथ स्तवन

नील वर्ण मल्लि जिनेश्वर, ध्यान निर्मल ध्यायो।
अल्पकाल मांही प्रभु, परम ज्ञान पायो॥
मल्लि जिनेश्वर नाम समर तरण शरण आयो॥१॥

कल्प पुष्पमाला जेम, सुगन्ध तन सुहायो।
सुर वधू वर नयन-भ्रमर, अधिक हि लिपटायो॥२॥

स्व पर चक्र विविध विघ्न, मिटत तो पसायो।
सिंहनाद थेकी गजेन्द्र, जेम दूर जायो॥३॥

वाण विमल निमल सुधा, रस संवेग छायो।
नर सुरासुर तिर्थि समाज, सुणत ही हरषायो॥४॥

जग दयाल तूं ही कृपाल, जनक ज्यूं सुखदायो।
वत्सल नाद स्वाम साहिब, सुजश तिलक पायो॥५॥

जपत जाप खपत पाप, तपत ही मिटायो।
मल्लि देव त्रिविध सेव, जग अछेरो पायो॥६॥

उगणीसै आसोज कृष्ण, तीज सु दिन आयो।
कुम्भनन्दन कर आनन्द, हर्ष थी में गायो॥७॥

(लय - जय गणेश ३ देवा)

## २०. श्री मुनिसुव्रत स्तवन

सुमित्रनन्दन श्री मुनि सुव्रत, जगतनाथ जिन जाणी ।
चारित्र ले केवल उपजायो उपशम रसनी वाणी रा ।
प्रभुजी, आप प्रबल बड़ भागी, त्रिभुवन दीपक सागी ॥१॥
चौत्रीस अतिशय नें पैंतीस वाणी, निरखत सुर इन्द्राणी ।
संवेग रस नी वाणी सांभल, हर्ष स्यूं आंख्यां भराणी ॥२॥
शब्द रूप रस गंध फरस, प्रतिकूल न हुवै तुम आगै ।
ज्यूं पंचदरशन पग नहीं मांडै (तिम) अशुभशब्दादिकभागै ॥३॥
सुर-कृत जल थल पुष्प पुञ्ज वर, ते छांड़ी चित दीनो ।
तुझ निश्वास सुगन्ध मुख परिमल, मन भ्रमर महालीनो ॥४॥
पंचेन्द्री सुर नर तिरि तुम स्यूं, किम हुवै दुख दायो ।
एकेन्द्री अनिल तजै प्रतिकूल पणु, बाजै गमतो वायो ॥५॥
राग द्वेष दुर्दन्त ते दमिया, जीत्या विषय विकारो ।
दीन दयाल आयो तुझ शरणे, तूं गति मति दातारो ॥६॥
सम्वत उगणीसै आसोज तीज कृष्ण, श्रीमुनिसुव्रत गाया ।
लाडनूं शहर मांहि रूड़ी रीते, आनन्द अधिको पाया ॥७॥

**(लय—भरतजी भूप भया छो वैरागी)**

# २२. श्री अरिष्टनेमि स्तवन

प्रभु नेमस्वामी, तूं जगनाथ अंतरजामी ॥
तूं तोरण स्यूं फिर्‌यो जिन स्वाम, अद्‌भुत बात करी तें अमाम
प्रभु नेम स्वामी० ॥ १ ॥

राजिमति छांडि जिनराय, शिव सुन्दर स्यूं प्रीत लगाय।
प्रभु नेम स्वामी० ॥ २ ॥

केवल पाया ध्यान वर ध्याय, इन्द्र शची निरखै हरषाय।
प्रभु नेम स्वामी० ॥ ३ ॥

नेरिया पिण पामें मन मोद, तुझ कल्याण सुर करत विनोद।
प्रभु नेम स्वामी० ॥ ४ ॥

राग रहित शिव सुख स्यूं प्रीत, कर्म हणै बलि द्वेष रहीत।
प्रभु नेम स्वामी० ॥ ५ ॥

इचरजकारी प्रभु थारो चरित, हूं प्रणमूं कर जोड़ी नित।
प्रभु नेम स्वामी० ॥ ६ ॥

उगणीसै विद चौथ कुंआर, नेम जप्यां पायो सुखसार।
प्रभु नेम स्वामी० ॥ ७ ॥

(लय छिणगई रे)

# २३. श्री पार्श्वनाथ स्तवन

लोह कंचन करै पारस काचो, ते कहो कर कुण लेवै हो।
पारस तूं प्रभु साचो पारस, आप समो कर देवै हो ।।
पारसदेव तुमारा दर्शन, भाग भला सोहो पावै हो ।।१।।

तुझ मुख-कमल पासे चमरावली, चन्द्र कान्तिवत सोहै।
हंस श्रेणि जाणे पंकज सेवै, देखत जन मन मोहै ।।२।।

स्फटिक सिंहासण सिंह आकारे, बैस देशना देवै ।
वन-मृग आवै वाणी सुणवा, जाणक सिंह ने सेवै ।।३।।

चन्द्र समो तुझ मुख महा शीतल, नयन चकोर हरषावै।
इन्द्र नरेन्द्र सुरासर रमणी, निरखत तृप्ति न थावै ।।४।।

पाखंडी सरागी आप निरागी, आपस में इम गैरी ।
वैर भाव पाखंडी राखै पिण आप त्यांरा नहीं वैरी ।।५।।

जिम सूरज खद्योत ऊपरै, वीर भाव नहीं आणै ।
इण विध प्रभु पिण पाखंडियां नें, खद्योत सरीखा जाणै। ६ ।

परम दयाल कृपाल पारस प्रभु, संवत उगणीसै गाया ।
आसोज कृष्ण तिथि चौथ लाडनूं, आनंद अधिको पाया।।७।।

(लय—पूज्य भिखणजी तुमारा दर्शन)

## २४. श्री महावीर स्तवन

चरम जिनेंद्र चौबीसमां जिन, अध हणवा महावीर ।
विकट तपवर ध्यान कर प्रभु पाया भव जल तीर ।।
नहीं इसो दूसरो जग वीर ।।
उपसर्ग सहिबा अडिग जिनवर, सुर गिर जेम सधीर ।।१।।

संगम दुःख दिया आकरा, पिण सुप्रसन्न निजर दयाल ।
जग उद्धार हुवौ मो थकी रे, ए डूबै इण काल ।२।
लोक अनारज बहु किया रे, उपसर्ग विविध प्रकार ।
ध्यान सुधारस लीनता जिन, मन में हर्ष अपार ।।३
इण पर कर्म खपाय नें प्रभु, पाया केवल वाण ।
उपशम रसमय बागरी प्रभु, अधिक अनुपम नाण ।।४।।
पुद्गल सुख अरि शिव ताणां रे, नरक तणां दातार ।
छांड रमणि किम्पाक बेलि, संवेग संयम धार ।।५.
निंदा नै स्तुति सम पणै रे, मान अनें अपमान
हर्ष शोक मोह परिहर्यां रे, पामै पद निर्वाण
इम बहुजन प्रभु तारिया रे, प्रणमूं चरम जिनंद ।
उगणीसै आसोज चौथ विद, हुओ अधिक आनन्द ।।७।

(लय — कपिरे प्रिया संदेशो कहै)